टीएचडीसी

पहल

राजभाषा गृह–पत्रिका

अंक: 36 जनवरी–जून, 2025

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड

THDC INDIA LIMITED

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड विद्युत मंत्रालय की राजभाषा ज्योति शील्ड से पुरस्कृत

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को 19 जून, 2025 को होटल अशोक, नई दिल्ली में आयोजित हुई विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में राजभाषा ज्योति शील्ड (प्रथम पुरस्कार) से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार माननीय विद्युत एवं आवासन और शहरी कार्य मंत्री, श्री मनोहर लाल के कर–कमलों से टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई एवं निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह ने प्राप्त किया। इस अवसर पर माननीय विद्युत राज्यमंत्री, श्री श्रीपाद नाईक, सचिव (विद्युत), श्री पंकज अग्रवाल (आईएएस), श्री धीरज कुमार श्रीवास्तव, मुख्य अभियंता (प्रभारी राजभाषा), विद्युत मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले सभी कार्यालयों/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के प्रमुख तथा प्रतिनिधि, हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य एवं अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

राजभाषा पत्रिका "पहल" के 35वें अंक का विमोचन

माननीय विद्युत एवं आवासन और शहरी कार्य मंत्री, श्री मनोहर लाल, माननीय विद्युत राज्यमंत्री, श्री श्रीपाद नाईक, सचिव (विद्युत), श्री पंकज अग्रवाल (आईएएस) के कर–कमलों से टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा गृह पत्रिका ''पहल'' के 35वें अंक का विमोचन किया गया।

"आप जिस बदलाव को देखना चाहते हैं, तो खुद को उस बदलाव का हिस्सा बनाइए।" – *महात्मा गांधी*

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से

प्रिय साथियों,

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका ''पहल'' के 36वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर आपसे संवाद करते हुए मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस अवसर पर मैं सर्वप्रथम टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड परिवार के सभी सदस्यों को बहुत–बहुत बधाई देता हूं कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड ने राजभाषा के क्षेत्र में एक और बड़ी उपलब्धि अर्जित की है, जिसके अंतर्गत भारत सरकार, विद्युत मंत्रालय की राजभाषा पुरस्कार योजना के अंतर्गत 19 जून, 2025 को हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में माननीय विद्युत, आवासन एवं शहरी कार्यमंत्री, श्री मनोहर लाल जी के कर–कमलों से 2023–24 में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु ''राजभाषा ज्योति'' पुरस्कार (प्रथम) प्राप्त हुआ है। इसका श्रेय निगम के सभी कर्मचारियों को जाता है जो राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास में अपना योगदान दे रहे हैं।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की सभी यूनिटों एवं कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन काफी सुदृढ़ स्थिति में है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम का पूर्णतया अनुपालन करने के प्रयास निरंतर किए जा रहे हैं। भारत सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना पर आधारित है जिसके अंतर्गत निगम में कर्मचारियों के लिए पूरे वर्ष विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियां संचालित कर उन्हें राजभाषा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

इस क्षेत्र में हमें अपने प्रयासों को इसी प्रकार निरंतर बढ़ाते रहने की आवश्यकता है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को प्राप्त हुआ यह पुरस्कार सभी कर्मचारियों को अपना अधिकाधिक कामकाज हिंदी में करने के लिए अवश्य ही प्रोत्साहित करेगा। आप सभी को एक बार पुनः हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

जय हिंद !

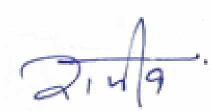

(राजीव विश्नोई)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (कार्मिक) का संदेश

प्रिय साथियों,

सर्वप्रथम मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूं कि हाल ही में विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार ने टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को राजभाषा ज्योति पुरस्कार से पुरस्कृत किया है। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड ने यह पुरस्कार विद्युत मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले सभी संस्थानों/सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के द्वारा इस पुरस्कार के लिए भेजी गई प्रविष्टियों में सर्वाधिक अंक अर्जित कर प्राप्त किया है। यह पुरस्कार 2023–24 के दौरान निगम में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रदान किया गया है। उल्लेखनीय है कि इसी अवधि के लिए 14 सितंबर, 2024 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को भारत सरकार, गृह मंत्रालय के द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की श्रेणी में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह जी के कर–कमलों से प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से भी पुरस्कृत किया गया था और इसी अवधि के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार की 29 जनवरी, 2025 को आयोजित हुई अर्धवार्षिक बैठक में ''नराकास राजभाषा वैजयंती'' (प्रथम पुरस्कार) से भी पुरस्कृत किया गया था, जो कि हम सबके लिए गर्व का विषय है।

जनवरी से जून, 2025 छमाही के दौरान 09 मई, 2025 को माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति के द्वारा नराकास, बुलंदशहर के अंतर्गत आने वाले 05 अन्य कार्यालयों के साथ निगम के खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय का संयुक्त राजभाषा निरीक्षण किया। उप समिति के माननीय अध्यक्ष एवं सदस्यगणों ने टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित कार्यकलापों के साथ–साथ निगम की व्यावसायिक गतिविधियों में हो रही बढ़ोत्तरी की भी प्रशंसा की है। माननीय उप समिति ने राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने के लिए कुछ सुझाव भी दिए हैं जिन्हें पूरे निगम में लागू करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न स्तरों एवं मंचों पर इस प्रकार की सराहना एवं पुरस्कार प्राप्त होने के पीछे आप सबकी कर्तव्यनिष्ठा एवं प्रतिबद्धता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। आइए, इसी प्रकार अपने प्रयासों को सभी क्षेत्रों में जारी रखते हुए नित्य नए कीर्तिमान बनाते रहें। एक बार पुनः आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद !

(शैलेन्द्र सिंह)
निदेशक(कार्मिक)

पहल

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका (अंक–36)

मुख्य संरक्षक
श्री राजीव विश्नोई
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री शैलेन्द्र सिंह
निदेशक (कार्मिक)

मार्गदर्शक
डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.)
श्री एस.बी.प्रसाद
अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.)

संपादक
श्री पंकज कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री टेलकीकर संतोष तुकाराम
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
श्री नरेश सिंह
सहायक अधिकारी (राजभाषा)
श्रीमती हेमलता कौर
कनि. अधिकारी (हिंदी)

संपर्क सूत्र
संपादक
''पहल''
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड,
ऋषिकेश–249201, उत्तराखंड
दूरभाष : 0135–2473614
ई–मेलः pankajksharma@thdc.co.in

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

विषय सूची

लेख / प्रेरक प्रसंग / लघुकथा

1. वैश्विक स्तर पर हिंदी की उड़ान 4
2. पंप स्टोरेज प्लांटः "ऊर्जा प्रबंधन की नई दिशा" 7
3. महाकुंभः आस्था का महासंगम 9
4. वादा और जीवन की भागदौड़ 11
5. हजामत 12
6. सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका 13
7. कार्तिक स्वामी मंदिर, रुद्रप्रयाग 15
8. भगवान भाव के भूखे हैं 17
9. राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 19

कविताएं / क्षणिकाएं / विचार

10. महाकाली का तांडव 21
11. क्योंकि मैं एक पिता हूँ 22
12. बोल सखी रे, पिया मन कैसे समाऊं 22
13. नारी की पराकाष्ठा / चुप्पी तोड़नी होगी 23
14. जुस्तजू 24
15. गंगा जल की महिमा / हिंदी का महत्व 25
16. पर्यावरण का बचाव / अंतिम ऊँचाई 26
17. पहली बारिश / जीवन 27

राजभाषा गतिविधियां

18. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन 28
19. कारपोरेट स्तरीय हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता 33
20. कारपोरेट कार्यालय में हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता 34
21. खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय में हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता .. 34
22. वीपीएचईपी पीपलकोटी में हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता 35
23. केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के प्रशिक्षार्थियों का अध्ययन दौरा 35
24. खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण 36
25. नराकास हरिद्वार की 39वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन .. 37
26. संपादक के नाम पाती 38

वैश्विक स्तर पर हिंदी की उड़ान

लेख

पंकज कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा),
कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

भारत में भाषायी विविधता होने के कारण अभी हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ है। वर्ष 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन में महात्मा गांधी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की बात कही थी। उनके साथ ही अनेक राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की वकालत की थी। संविधान के निर्माण में हर पहलू को लंबी बहस से गुजरना पड़ा ताकि समाज के किसी हिस्से को यह न लगे कि संविधान में उस तबके का ध्यान नहीं रखा गया। भाषायी विविधता को देखते हुए लंबी बहस के बाद 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। 26 जून, 1975 को गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग की स्थापना के बाद राजभाषा विभाग के प्रयासों से हिंदी को नई राह प्राप्त हुई। राजभाषा नीति, अधिनियम एवं नियमों का पालन दृढ़ता से कराया गया। द्विभाषा एवं त्रिभाषा सूत्र पर बहुत परिश्रम किया गया। हिंदी के सरलीकरण हेतु निरंतर प्रयास किए गए । संसदीय राजभाषा समितियों, मंत्रालय के निरीक्षणों एवं मुख्यालय एवं कार्यालय स्तर पर निरीक्षण की व्यवस्था स्थापित की गई। प्रत्येक वर्ष राजभाषा कार्यक्रम जारी किए गए, जिसके परिणामस्वरूप सरकारी स्तर पर हिंदी के प्रयोग में वृद्धि हुई। यूनिकोड आधारित विभिन्न हिंदी टाइपिंग टूल्स का आविष्कार किया गया। जो अधिकारी वर्ग के लोग पुराने जमाने के टाइपराइटरों पर अपना नाम भी नहीं लिख पाते थे, वे आज हिंदी में ई–मेल कर पा रहे हैं, फेसबुक और व्हाट्सएप पर हिंदी में पोस्ट शेयर कर रहे हैं। जिससे अब यह जन–जन की भाषा बनती जा रही है। यह अवश्य ही अब राष्ट्रभाषा और विश्वभाषा बनने की राह पर चल पड़ी है।

अनेक शोधों से यह सामने आया है कि हिंदी केवल भारत तक ही सीमित नहीं है अपितु विश्व के 130 देशों में इसका विस्तार हो चुका है। हिंदी भारत की राजभाषा तो है ही साथ ही यह फिजी की राजभाषा भी है। इसे मॉरीशस, त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम में क्षेत्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। वैसे तो हिंदी भाषी विश्व में कहां नहीं हैं परन्तु अमेरिका, ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलेंड, जर्मनी, सिंगापुर, कनाड़ा, यूएई आदि अनेक देशों में हिंदी भाषी लोगों की संख्या बहुतायत में है। यदि आंकड़ों की बात करें तो विकिपीडिया के अनुसार हिंदी विश्व में तीसरे स्थान पर आती है जिसमें प्रथम स्थान पर मैंडरिन (चाइनीज) एवं दूसरे स्थान पर अंग्रेजी आती है। विख्यात शोधकर्ता डॉ जयंती प्रसाद नौटियाल ने अपने शोध में निष्कर्ष निकाला है कि विश्व में हिंदी का प्रथम स्थान है। एथनोलॉग के सर्वेक्षण लैंगुवेजस ऑफ द वर्ल्ड 2015 के अनुसार हिंदी, मैंडरिन (चाइनीज) के बाद दूसरे स्थान पर आती है। इन अलग–अलग सर्वेक्षणों के आधार पर यदि देखा जाए तो हिंदी पूरे विश्व में बोली जाने वाली लगभग 6500 भाषाओं में बहुत प्रतिष्ठित स्थान पर है।

वर्तमान में विश्व में दैनिक रूप से प्रकाशित होने वाले प्रथम 20 समाचार पत्रों में हिंदी के पांच समाचार पत्र क्रमशः दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान एवं राजस्थान पत्रिका शामिल हैं। विश्व के 170 से अधिक देशों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। रूस में हिंदी की इतनी लोकप्रियता है कि हिंदी में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएचडी की पढ़ाई भी की जा रही है। यहां पर कुछ विद्यालयों में कक्षा छह से ही हिंदी पढ़ाई जा रही है। विश्व में हिंदी साहित्य का अनुवाद बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका में अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। पड़ोसी देश चीन के अनेक विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में हिंदी पढाई जा रही है । इसके अतिरिक्त इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया तथा सिंगापुर में भी हिंदी की पढ़ाई की जाती है। फिजी में विद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई को अनिवार्य किया गया है। भारत के कई विश्वविद्यालयों में अनेक विदेशी छात्र हिंदी की पढ़ाई कर रहे हैं, जिनमें जापान और कोरिया सहित अनेक देशों के छात्र शामिल हैं।

वर्ष 2019 के अनुसार जनसंख्या के आधार पर भारत विश्व का दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है। विश्व के कुल भू–भाग का केवल 2.4 प्रतिशत भू–भाग भारत के पास है परन्तु इसमें विश्व की 17 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। इतनी बड़ी जनसंख्या की विविध आवश्यकताएं हैं और अनेक वस्तुएं ऐसी हैं जिनकी पूर्ति के लिए हम अभी भी विदेशों पर निर्भर हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पाद, रक्षा सामग्री, कार्बनिक रसायन, नाभिकीय मशीनरी, कम्प्यूटर, मोबाइल एवं इसके पुर्जे, चार पहिया एवं दुपहिया वाहनों के पुर्जे, खिलौनों एवं उर्वरक का आयात बहुतायत में किया जाता है। हालांकि, सरकार ने इस दिशा में अनेक कदम उठाए हैं और ''मेक इन इंडिया'' अभियान की शुरूआत की है लेकिन इसके लिए भी हमें विदेशी कंपनियों को भारत में स्थापित करने की आवश्यकता होगी। भारत में विदेशी कंपनियों के स्थापित होने से भारत के लोगों को रोजगार के रूप में अनेक फायदे होंगे। विदेशी कंपनियों को भी मालूम है कि इतनी विशाल आबादी वाले देश में सशक्त, सक्षम एवं कार्यकुशल मानवशक्ति आसानी से उपलब्ध होगी। विश्व में सर्वाधिक आबादी वाले देश चीन की विश्व में घटती हुई लोकप्रियता का लाभ भारत को अवश्य ही उठाना चाहिए। भारत विश्व का सबसे बड़ा बाजार है और यह विश्व के देशों को अच्छी प्रकार मालूम है कि किसी भी देश में अपनी वस्तुओं का निर्यात करने के लिए तथा उस देश में अपने प्लांट एवं मशीनरी को स्थापित करने के लिए वहां की भाषा सीखना अत्यंत आवश्यक है। भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में वैश्विक स्तर पर भारत का आर्थिक, सामरिक, राजनैतिक प्रभाव बढ़ रहा है। इसलिए विश्व समुदाय में भारत की राजभाषा हिंदी को सीखने और समझने की ललक बढ़ रही है जो कि इसे विश्व भाषा के रूप में स्थापित करने में काफी सहायक सिद्ध होगी।

इस दिशा में सरकार ने अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं जिनमें भारत सरकार ने मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की जिससे कि हिंदी अंतरराष्ट्रीय भाषा बन सके। विश्व हिदी सचिवालय ने 11 फरवरी, 2008 से कार्य करना प्रारंभ किया। यह सचिवालय हिंदी को विश्वभाषा के रूप में प्रोन्नत करने, हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की राजभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए सघन प्रयास करने तथा हिंदी में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, संगोष्ठी, समूह विचार–विमर्श, चर्चा तथा कवि सम्मेलन जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है । इसके साथ ही यह अंतरराष्ट्रीय हिंदी पत्रिकाओं एवं अंतरराष्ट्रीय हिंदी समाचार पत्रों का प्रकाशन भी करता है। हालांकि मॉरीशस की राजभाषा अंग्रेजी है परन्तु यहां पर 68 प्रतिशत से अधिक आबादी भारतीय मूल की है। दोनों देशों के बीच लंबे समय से सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंध रहे हैं, जिसे देखते हुए मारीशस में इस सचिवालय की स्थापना करना युक्तिसंगत समझा गया।

संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के समय मानव सभ्यता के विनाश को रोकने एवं विश्व के राष्ट्रों के मध्य शान्ति तथा सुरक्षा कायम करने के उद्देश्य से 24 अक्टूबर,1945 को की गई। उस समय इसमें 50 देश शामिल हुए, जिनकी संख्या अब बढ़कर 193 हो गई है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अंतर्गत सुरक्षा परिषद, अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय, महासभा, सचिवालय, आर्थिक और सामाजिक परिषद एवं न्याय परिषद को मिलाकर कुल छह संस्थाएं आती हैं। 193 देशों की सदस्यता के साथ संयुक्त राष्ट्र की राजकाज की भाषाएं भी होनी चाहिए क्योंकि बिना समुचित संचार के इतने देशों को जोड़कर रखना संभव नहीं है। प्रारंभ में संयुक्त राष्ट्र की चार राजभाषाएं थी जिनमें अंग्रेजी, रशियन, फ्रेंच और मैंडरिन (चाइनीज) शामिल थी। ये भाषाएं विश्व की प्रमुख महाशक्तियों की भाषाएं थी इसलिए इन्हें संयुक्त राष्ट्र की राजभाषाएं बनाया गया, परन्तु निरंतर बढ़ती आवश्यकता को देखते हुए बाद में इनमें अरबी और स्पेनिश को भी शामिल कर लिया गया।

भारत सरकार हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की राजभाषाओं में शामिल करने के लिए निरंतर प्रयास करती रही। दक्षिण एशिया की विशाल जनसंख्या पूरे विश्व में फैली हुई है जिसमें हिंदी, उर्दू और बांग्ला भाषी लोगों की संख्या सर्वाधिक है। इसलिए लंबे कूटनीतिक प्रयासों के फलस्वरूप इन तीनों भाषाओ को संयुक्त राष्ट्र संघ की राजभाषाओं में सम्मिलित किया गया। भारत की ओर से प्रस्तुत किए गए हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने के प्रस्ताव को महासभा ने मंजूरी दी। इस प्रयोजन से भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र संघ को आठ लाख डॉलर की मदद भी दी है। अब संयुक्त राष्ट्र में सभी कामकाज और जरूरी संदेश व समाचार इन तीनों भाषाओं में भी उपलब्ध होंगे। भाषाई आंकड़ों की दृष्टि से

जो सर्वाधिक प्रमाणिक जानकारियां सामने आई हैं, उनके आधार पर संयुक्त राष्ट्र संघ की छह राजभाषाओं की तुलना में मैंडरिन (चाइनीज) 80 करोड़, हिंदी 55 करोड़, स्पेनिश 40 करोड़, अंग्रेजी 40 करोड़, अरबी 20 करोड़, रशियन 17 करोड़ और फ्रेंच 09 करोड़ लोगों के द्वारा बोली जाती है। हिंदी दूसरे स्थान पर होने के कारण यह उसका वैध अधिकार है कि उसे संयुक्त राष्ट्र में पहले ही सम्मिलित कर लिया जाना चाहिए था। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की राजभाषा बनाने के लिए भारत सरकार ने वर्ष 2018 से परियोजना मोड में कार्य प्रारंभ किया। तभी से संयुक्त राष्ट्र ने हिंदी में ट्वीटर अकाउंट एवं न्यूज पोर्टल प्रारंभ कर दिया था, जिस पर प्रत्येक सप्ताह हिंदी बुलेटिन की सेवा शुरू हुई। संयुक्त राष्ट्र के मंच से हिंदी में सेवाएं प्रारंभ होना इसलिए आवश्यक था कि संयुक्त राष्ट्र से जुड़े अंतरराष्ट्रीय कानूनों, सुरक्षा, सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति, मानवाधिकारों और विश्वशांति के मुद्दों से सामान्य जनसमूह परिचित हो सके। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की राजभाषाओं में शामिल करने के साथ ही भारत में संयुक्त राष्ट्र की अन्य राजभाषाओं को सीखने वालों की संख्या भी बढ़ेगी जिससे भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी प्राप्त होंगे तथा दूसरे देशों में हो रहे महत्वपूर्ण अनुसंधान एवं विकास से परिचित होकर हमें अपने राष्ट्र के नवनिर्माण में भी मदद मिलेगी।

यहां यह समझने की आवश्यकता है कि प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र की अपनी स्वतंत्र राष्ट्रभाषा है और वे अपनी शिक्षा व्यवस्था एवं सरकारी कार्य से लेकर साधारण बोलचाल तक में अपनी भाषा का ही प्रयोग करते हैं। ये सभी देश आज विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में आते हैं। आमतौर पर भारत के पढ़े लिखे वर्ग सहित आम लोगों में भी यह धारणा है कि भारत से बाहर यदि जा रहे हैं तो सिर्फ अंग्रेजी में ही बात करना है तभी आपकी बात को समझा जाएगा क्योंकि अंग्रेजी को विश्व की संपर्क भाषा का दर्जा मिला हुआ है। परन्तु अनेक बड़े और विकसित देश अपनी भाषा में ही कार्य करते हैं और सिर्फ अपनी भाषा को ही समझते हैं। यदि किसी अन्य देश के साथ उनके साथ संपर्क करना हो तो उसके लिए दुभाषिये की आवश्यकता होती है। यदि हम उनसे अंग्रेजी में बात करते हैं तो वे इसे समझते ही नहीं। ऐसा ही एक किस्सा पूर्व गृह राज्यमंत्री श्री किरण रीजिजू ने चंडीगढ में हुए क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में अपने भाषण के दौरान सुनाया। उन्होंने बताया कि भारत का एक प्रतिनिधिमंडल एक बार रूस दौरे पर गया तो सभी प्रतिनिधियों को एक–एक दुभाषिया उपलब्ध कराया गया था ताकि वे हिंदी से रशियन एवं रशियन से हिंदी को आसानी से समझ सकें। अनेक प्रतिनिधियों ने दुभाषिये से अंग्रेजी में पूछताछ करना शुरू कर दिया तो दुभाषिये ने कहा कि वी डोंट नो इंग्लिश। परेशान प्रतिनिधि श्री रीजिजू के पास गए और उन्हें समस्या बताई कि यह दुभाषिये अंग्रेजी नहीं जानते हम कैसे कम्यूनिकेट करें । श्री रीजिजू ने उन्हें समझाया कि ये दुभाषिए हिंदी से रशियन एवं रशियन से हिंदी जानते हैं आप इनसे हिंदी में ही बात करें और हिंदी में उसका उत्तर प्राप्त करें।

आजकल गूगल ने भाषाओं को आपस में जोड़ने का बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया है। गूगल ट्रांसलेशन में यदि कोई वाक्य हिंदी में बोलकर डाल दिया जाए तो उसका अनुवाद वह अपेक्षित भाषा में कर देता है। जिसका उपयोग कर किसी भी देश में आसानी से घूमा जा सकता है। अब विश्व के एक देश को दूसरे से जोड़ने के लिए भाषा कोई बड़ी समस्या नहीं रही। ऋषिकेश में निवास करने के फलस्वरूप यह देखा गया है कि विदेशी पर्यटक जब यहां घूमने आते हैं तो वे बहुत अच्छी हिंदी सीखकर आते हैं। विदेशी लोगों के द्वारा नमस्ते, आभार, धन्यवाद जैसे शब्द आराम से बोले जाते हैं, यहां तक कि ''कितनी दूर है'', ''कितने पैसे लगेंगे'', ''कैसे हो'', ''क्या कर रहे हो'', ''हम कहां जा रहे हैं'' जैसे अनेक सामान्य वाक्य भी वे लोग आराम से पूछ लेते हैं। वे लोगों के साथ हिंदी में बात करना चाहते हैं लेकिन यहां लोगों को यह भ्रम रहता है कि यदि हम हिंदी में बोलेगें तो वे लोग समझ नहीं पाएंगे। यही स्थिति पूरे देश के पर्यटन स्थलों की है। परन्तु ऐसा न सोचें और विदेशी प्रवासियों के साथ साधारण हिंदी में बात करें और हिंदी के प्रचार–प्रसार में सहायक बने। ऐसा करके देखें, परन्तु फिर भी यदि वे लोग हिंदी नहीं समझ पा रहे हैं तब ही अंग्रेजी में या उनकी भाषा में बात करें। अपनी भाषा पर अभिमान करें और गौरव का अनुभव करें कि हिंदी हैं हम... ।

****

"यदि आप सभी गलतियों को एक ही बार में मिटा देंगे, तो आप स्वयं को भी खो देंगे।" – रवीन्द्रनाथ टैगोर

पंप स्टोरेज प्लांटः "ऊर्जा प्रबंधन की नई दिशा"

लेख

सिमरन शाहीन
सहायक प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)
अमेलिया कोल माइन परियोजना, सिंगरौली

ना कोयला, ना धुआँ लायें, पंप स्टोरेज प्लांट हरित राह दिखाए।
प्रकृति से तालमेल बनाकर, नव ऊर्जा का दीप जलाएं।

आज के युग में बढती जनसंख्या और बढ़ते औद्योगीकरण के कारण ऊर्जा की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए अक्षय ऊर्जा स्रोतों एवं नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा को अपनाया जा रहा है लेकिन इनके अस्थिर स्वभाव को संतुलित करने व ऊर्जा को इस तरह से संचालित व संचित करना जरूरी हो गया है कि आवश्यकता पड़ने पर ऊर्जा (विद्युत ऊर्जा) की पूर्ति की जा सके। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु पंप स्टोरेज प्लांट एक अत्यंत प्रभावी तकनीक है। यह न केवल आवश्यकता पड़ने पर बिजली की आपूर्ति करता है बल्कि ऊर्जा को संरक्षित करने की भी प्रभावी तकनीक है, यह तकनीक विद्युत ऊर्जा आपूर्ति और मांग के बीच संतुलन बनाये रखने में भी अहम भूमिका निभाती है।

पंप स्टोरेज प्लांट क्या है?

पंप स्टोरेज प्लांट एक प्रकार का जल विद्युत संयंत्र एवं जल आधारित ऊर्जा संचयन प्रणाली है, जिसमें ऊर्जा को संग्रहीत करके आवश्यकतानुसार पुनः उपयोग किया जा सकता है। इस संयंत्र का मूल सिद्धांत "ऊर्जा का रूपांतरण" है। इस तकनीक में दो जलाशयों का उपयोग किया जाता है – एक ऊंचाई पर (ऊपरी जलाशय) और दूसरा निचले स्तर पर (निचला जलाशय)।

जब बिजली की मांग कम होती है तब उस समय अतिरिक्त बिजली का उपयोग करके पानी को निचले जलाशय से ऊपरी जलाशय में पंप द्वारा चढ़ाया जाता है और जब बिजली की मांग अधिक हो जाती है तब पानी को गुरुत्वाकर्षण बल द्वारा पानी को नीचे गिराया जाता है। जिससे टरबाइन घूमती है और विद्युत ऊर्जा (बिजली) उत्पन्न होती है। यह प्रणाली ऊर्जा को स्थितिज ऊर्जा में संग्रहीत करती है और आवश्यकता पड़ने पर उसे विद्युत ऊर्जा (बिजली) के रूप में परिवर्तित करती है।

पंप स्टोरेज प्लांट की कार्यप्रणाली-

- **कम मांग के समयः**– जब बिजली की खपत कम होती है तो पंप की मदद से निचले जलाशय का पानी ऊपरी जलाशय में भेजा जाता है।
- **अधिक मांग के समयः**– जैसे ही बिजली की मांग बढ़ती है, ऊपर संग्रहीत पानी को नीचे गिराया जाता है जिससे टरबाइन चालित होती है और बिजली उत्पन्न होती है।

पंप स्टोरेज प्लांट के लाभ

- **ऊर्जा प्रबंधन की उत्कृष्ट प्रभावी तकनीकः** यह बिजली की मांग व आपूर्ति के बीच प्रभावी संतुलन बना कर रखता है जिससे ग्रिड में भी स्थिरता बनी रहती है।
- **पर्यावरणीय दृष्टि** से पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव कम है एवं कोई कार्बनिक उत्सर्जन नहीं करता और पारंपरिक जलविद्युत संयंत्रों की तुलना में अधिक प्रभावी तकनीक है।

– **शीघ्र संचालन:** यह संयंत्र बहुत ही कम समय में संचालित या बंद किया जा सकता है, जिससे यह आपातकालीन स्थितियों में एक प्रभावी विद्युत आपूर्ति संयंत्र के रूप में कार्य करता है।
– **दीर्घकालीन समाधान:** एक बार पंप स्टोरेज प्लांट निर्माण के बाद यह वर्षों तक कम लागत पर कार्य कर सकता है और ऊर्जा की आपूर्ति करता रहता है।

पंप स्टोरेज प्लांट स्थापित करने में आने वाली चुनौतियां एवं समाधान-

चुनौतियाँ:

1. **भौगोलिक स्थिति:** पंप स्टोरेज प्लांट स्थापित करने के लिए ऊँचाई वाले क्षेत्र और जल स्रोत की आवश्यकता होती है, जो हर जगह उपलब्ध नहीं होते और इसके चुनाव में काफी बाधाएं सामने आती हैं। इसलिए ऐसी जगह चुनी जाती है, जहाँ प्राकृतिक ढलान और जल स्रोत पहले से हों। जिससे निर्माण की जटिलता और लागत दोनों में कमी लाई जा सके।
2. **प्रारंभिक निवेश लागत:** पंप स्टोरेज प्लांट स्थापित करने में भारी पूंजी निवेश व लागत की आवश्यकता पड़ती है। परियोजना को सफल बनाने हेतु सरकार एवं निजी क्षेत्र के सहयोग से वित्तीय और नीति संबंधी समर्थन प्राप्त किया जा सकता है। स्थापित होने के पश्चात इसके संचालन और रखरखाव की लागत भी अपेक्षाकृत कम होती है।
3. **पर्यावरणीय प्रभाव:** जलाशयों के निर्माण में कभी–कभी पर्यावरण पर प्रभाव पड़ सकता है, इसलिए पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी संतुलन को ध्यान में रखते हुए प्लांट को स्थापित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है जिसको पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA) कर पर्यावरण–संवेदनशील क्षेत्रों से बचते हुए संयंत्र की योजना बनाई जाती है। वर्तमान समय में जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन, कार्बन उत्सर्जन और ऊर्जा संकट की चुनौतियों से जूझ रही है, पंप स्टोरेज प्लांट जैसे समाधान अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।
4. **तकनीकी चुनौतियां:** प्लांट को स्थापित करने में और संचालन में उच्च तकनीकी कुशलता की आवश्यकता होती है। आधुनिक तकनीक का उपयोग नवीनतम तकनीकों के प्रयोग से लागत और समय में कमी लाकर विद्युत ऊर्जा (बिजली) का निर्माण करते हैं।

अतः पम्प स्टोरेज प्लांट लागत भविष्य में ऊर्जा के क्षेत्र में प्रभावकारी बदलाव ला सकता है, जब हम नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की और बढ़ रहे हैं, तब यह प्रणाली बहुत कारगर सिद्ध होती है, यह तकनीक न केवल ऊर्जा की मांग और आपूर्ति के बीच में संतुलन का काम करती है बल्कि विद्युत ऊर्जा का संचयन एवं भण्डार कर ऊर्जा की आपूर्ति करने में सहायक होती है ऊर्जा सुरक्षा एवं सतत् विकास एवं यह प्रक्रिया न केवल दक्ष है, बल्कि यह ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों को भी अधिक प्रभावी बनाती है, क्योंकि यह सौर एवं पवन ऊर्जा की अनियमितता को संतुलित करने में मदद करती है। साथ ही, यह तकनीक पारंपरिक थर्मल या न्यूक्लियर प्लांट की तुलना में कहीं अधिक सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल विद्युत ऊर्जा (बिजली) उत्पादन तकनीकी कार्य प्रणाली विकल्प के रूप में स्थापित होती है।

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि पंप स्टोरेज प्लांट न केवल एक प्रभावी तकनीक है, बल्कि यह हरित ऊर्जा की दिशा में एक मजबूत कदम भी है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए, जहां ऊर्जा की मांग तेजी से बढ़ रही है, पंप स्टोरेज तकनीक ऊर्जा क्षेत्र को मजबूती देने के साथ–साथ पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी सहायक सिद्ध हो सकती है। अतः इसके विकास और विस्तार को बढ़ावा देना समय की मांग हो गई है।

****

महाकुंभः आस्था का महासंगम और भारत का सबसे पुराना जनसंपर्क साधन एवं सॉफ्ट पावर

लेख

अविनाश कुमार
सहायक प्रबंधक (जनसंपर्क)
वीपीएचईपी, पीपलकोटी

जब पूरी दुनिया किसी देश की "ब्रांड इमेज" को चमकाने के लिए करोड़ों डॉलर विज्ञापनों पर खर्च करती है, भारत हजारों साल पुरानी एक परंपरा से चुपचाप वह प्रभाव छोड़ देता है जो दुनिया के लिए रहस्य और आकर्षण दोनों बन जाता है। यह परंपरा है – **महाकुंभ मेला**। हर बारह साल में आयोजित होने वाला महाकुंभ मेला केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना का जीवंत उदाहरण है। प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नाशिक जैसे तीर्थस्थलों पर बारी–बारी से आयोजित यह मेला लाखों–करोड़ों श्रद्धालुओं, संतों, पर्यटकों और शोधकर्ताओं को एक ही स्थान पर लाकर खड़ा करता है। जहाँ एक ओर आस्था की डुबकी लगाई जाती है, वहीं दूसरी ओर यह मेला प्रशासनिक कौशल, सेवा भावना, स्वच्छता अभियान, जनसंपर्क और तकनीकी समन्वय का भी प्रदर्शन करता है। यह आयोजन बताता है कि भारत न केवल परंपराओं को संजोता है, बल्कि उन्हें आधुनिक व्यवस्थाओं के साथ जोड़कर विश्व को शांति, समरसता और सह–अस्तित्व का संदेश भी देता है। हाल ही में प्रयागराज में संपन्न हुआ कुंभ मेला (जनवरी–फरवरी 2025) न केवल भारत की आध्यात्मिकता का उत्सव था, बल्कि यह एक संगठित, सांस्कृतिक और रणनीतिक जनसंपर्क (Public Relations) अभियान भी था, जो अपने आप में भारत की सॉफ्ट पावर का सबसे मजबूत उदाहरण बन चुका है।

सॉफ्ट पावर क्या है और कुंभ इसमें कहाँ ठहरता है?

'सॉफ्ट पावर' शब्द मूलतः अमेरिकी राजनयिक जोसेफ नाय ने गढ़ा था, जो इस विचार को प्रस्तुत करता है कि कोई देश बिना सैन्य या आर्थिक दबाव के, केवल अपने सांस्कृतिक मूल्यों, विचारों और आचरण से अन्य देशों को कैसे आकर्षित कर सकता है। इस नजरिए से देखें तो महाकुंभ भारत का वह 'मौन संवाद' है, जो सदियों से दुनिया को भारतीय जीवनदृष्टि, सहिष्णुता, समरसता और आध्यात्मिकता से परिचित कराता आ रहा है। यह आयोजन किसी सरकारी प्रेस विज्ञप्ति या ब्रांडिंग एजेंसी की उपज नहीं, बल्कि सदियों पुराना जनसंपर्क साधन है, जिसमें भागीदारी ही प्रचार है और सेवा ही संवाद।

कुंभः भारत की सांस्कृतिक कूटनीति का वैश्विक मंच

कुंभ मेला अब केवल हिन्दू धर्म का उत्सव नहीं रहा, यह ग्लोबल कल्चरल डायलॉग बन चुका है। विदेशों से आने वाले श्रद्धालु, पत्रकार, शोधार्थी और फोटोग्राफर न केवल स्नान करते हैं, बल्कि वे भारतीय संस्कृति के विविध रंगों को कैमरे में कैद करते हैं, लेखों और शोधपत्रों में व्यक्त करते हैं और जब लौटते हैं तो भारत की 'ब्रांड वैल्यू' बढ़ा जाते हैं। यह एक ऐसी कूटनीति है जो बिना किसी दूतावास और संधि तहत किया जाता है। यह केवल परंपरा और दर्शन के जरिये सांस्कृतिक प्रभाव के जरिए चलती है।

सबसे पुराना जनसंपर्क मॉडल

कुंभ मेला जनसंपर्क का एक जीवंत और ऐतिहासिक मॉडल है। इसमें 'ऑडियंस' खुद चलकर आती है, 'संदेश' अनुभव के माध्यम से पहुंचता है, 'विस्तार' पीढ़ियों और सीमाओं से परे होता है और 'प्रतिक्रिया' श्रद्धा, समर्पण और सहभागिता

के रूप में मिलती है। अगर आधुनिक पीआर का उद्देश्य जन–धारणा को गढ़ना है, तो महाकुंभ लोक मानस को गहराई से छूने वाला सबसे सशक्त माध्यम रहा है, जिसमें संवाद शब्दों से नहीं, अनुभव से होता है।

करोड़ों की भीड़, दुनिया के लिए एक आश्चर्य

महाकुंभ की सबसे बड़ी विशेषता इसकी अभूतपूर्व जनभागीदारी है। यह वह मेला है जहाँ कुछ ही सप्ताह में 45 करोड़ के आसपास लोग (महाकुंभ 2025 का आधिकारिक आँकड़ा) एक ही स्थान पर एकत्र हो जाते हैं, बिना किसी औपचारिक निमंत्रण या प्रचार के। न कोई टिकट, न कोई बाध्यता, फिर भी यह भीड़ हर बार पहले से ज्यादा बढ़ती जाती है। सांस्कृतिक आयोजनों में इतनी विशाल और स्वप्रेरित भागीदारी दुनिया के किसी अन्य देश में नहीं देखी जाती। यह केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि भारत की सामूहिक चेतना, अनुशासन और अद्भुत सामाजिक संरचना का प्रमाण भी है। भीड़ का यह प्रवाह एक साल की योजना, महीनों की तैयारी और हर दिन के सूक्ष्म प्रबंधन का परिणाम होता है — जो अपने आप में भारत के संगठित सार्वजनिक जीवन की ताकत को दर्शाता है।

प्रबंधन और तकनीक का आधुनिक संगम

21वीं सदी में महाकुंभ एक स्मार्ट इवेंट बन चुका है। भीड़ प्रबंधन के लिए AI आधारित निगरानी, रीयल टाइम हेल्थ एंड सेफ्टी मैकेनिज़्म, डिजिटल मैपिंग, ट्रैफिक कंट्रोल, मोबाइल एप्स और सोशल मीडिया कम्युनिकेशन — यह सब दिखाता है कि भारत परंपरा में रहते हुए भी तकनीक से संवाद करना जानता है।

सेवा और समरसता का वैश्विक पाठ

महाकुंभ में लाखों लोग बिना निमंत्रण, बिना किसी सुविधा की गारंटी के आते हैं, लेकिन फिर भी कोई भूखा नहीं रहता, कोई अकेला नहीं होता, कोई उपेक्षित नहीं दिखता। यह सेवा, सहयोग और सामाजिक एकता का ऐसा उदाहरण है, जो किसी सीएसआर रिपोर्ट से कहीं अधिक प्रभावी है। यहाँ का अदृश्य समन्वय भारत के सामाजिक ताने–बाने को दुनिया के सामने रखने का अवसर बन जाता है।

अतः महाकुंभ वह आयोजन है जो भारत को बिना बोले भी बहुत कुछ कहने देता है। यह एक 'मौन जनसंपर्क' (Silent PR) है, जहाँ न कोई स्लोगन होता है, न कोई स्पॉन्सर। केवल आस्था, अनुभव और आत्मीयता होती है। यह भारत की सबसे पुरानी जनसंपर्क प्रणाली है, जिसने बिना किसी प्रचार तंत्र के, भारत की आत्मा को दुनिया के कोनों तक पहुंचाया है, और यही भारत की सबसे गहरी, सबसे प्रभावी सॉफ्ट पावर है, जो समय से नहीं चलती, पर समय को दिशा देती है।

****

"जो लोग समय का सम्मान नहीं करते, समय भी उनका सम्मान नहीं करता।" – चाणक्य

वादा और जीवन की भागदौड़

लघु कथा

काजल परमार
सहायक प्रबंधक (जनसंपर्क)
ऋषिकेश

वर्तमान समय में हम सभी अपने–अपने कार्यों के प्रति बेहद संवेदनशील और सजग हो चुके हैं। हर दिन किसी नई दौड़ में शामिल होते हैं–कभी स्कूल की घंटी, कभी कॉलेज की क्लास, और फिर नौकरी की समय–सीमा। इसी हड़बड़ी में न जाने कितने ख्वाब, कितनी कहानियाँ और कितने वादे अधूरे ही रह जाते हैं। हम लगातार आगे बढ़ते रहते हैं, लेकिन कभी–कभी कुछ अहम बातें–जिन्हें निभाना हमारे लिए जरूरी था– हमारे पास लौटकर नहीं आ पाती। समय हमारे हाथ से ऐसे फिसलता है जैसे मुट्ठी से रेत, और पीछे रह जाती है बस अधूरी कसक।

कई वर्ष पहले की बात है, जब मैं धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश में मास्टर्स की पढ़ाई कर रही थी, तब मेरी जिंदगी भी इसी भागदौड़ में थी। उस समय एक वादा किया था, लेकिन वक्त और परिस्थितियाँ मेरे साथ नहीं थी। यह एक पुरानी बात है, लेकिन जितनी पुरानी बात होती है, उतना ही ज्यादा परेशान करती है।

वह एक दिन की बात है जब क्लास प्रोजेक्ट के लिए हमें पालमपुर के पास स्थित एक ओल्ड ऐज होम में डाक्यूमेंट्री बनानी थी। मन में एक अजीब सा डर था,''क्या पूछूंगी इनसे?'' मुझे लगता था कि मुझे सबकुछ पहले से ही पता है, फिर नया क्या पूछूँगी। फिर भी, यह प्रोजेक्ट तो पूरा करना ही था, तो मैंने वहां दस्तक दी, एक नए परिवार में।

यह नया परिवार था उन वृद्धजनों का जिनके अपने परिवार ने उन्हें अकेला छोड़कर 'ओल्ड ऐज' होम में भेज दिया था, और कुछ अपने परिवारों को छोड़कर यहाँ आ चुके थे। हर कमरे में एक अलग कहानी थी। एक अलग पीड़ा, एक अलग अहसास। कैमरे के लेंस के आगे सफेद मुलायम बाल, अनुभवों से भरी झुर्रियां, धुंधली आँखें जो आँसुओं से भरी हुईं थी। वह आँसू एक कहानी सुना रहे थे और मैं लेंस के पीछे खड़ी होकर उन अनुभवों को सुनते हुए न जाने क्यों क्रोध और पीड़ा से आँसू बहाने लगी थी।

उनकी पीड़ा थी कि अपनों द्वारा ठुकरा दिया जाना और जीवन के आखिरी पड़ाव में अकेले छोड़ दिए जाने की। सबकी पीड़ा एक जैसी थी और उनकी इच्छाएँ भी कुछ एक सी ही थी। वे बस यही चाहते थे कि कोई एक बार उनके पास मिलने आ जाए, चाहे बेटा हो, बहु हो, पोता–पोती हो, बेटी हो या कोई भी अपने घर का सदस्य या फिर भगवान से मिल लें, जो भी पहले हो जाए। लेकिन विडंबना यह थी कि यदि पहले वाली चाह पूरी होती तो वे यहाँ नहीं होते, और भगवान से मिलना तो केवल उसकी मर्जी से ही संभव था। दोनों बातें एक साथ पूरी नहीं हो सकतीं थी और वह भी जल्दी तो बिल्कुल भी नहीं।

फिर अंत में उन वृद्धजनों का एक सवाल था और साथ में एक आस भी, ''तुम तो आती रहना, लगेगा मिलने तो कोई न कोई आया।'' लेकिन यह वादा मैं भी पूरा नहीं कर पाई। जैसे ही प्रोजेक्ट पूरा किया, तो जीवन की दौड़ में फिर से उलझ गई। सोचती रही लेकिन जा नहीं पाई। यह वादा पूरा करने की राह खो चुकी थी, लेकिन मेरे भीतर एक खामोश सी असमर्थता और कचोट रह गई, जिसे समय ने और भी बढ़ा दिया। हमारे जीवन की भागदौड़ में हम बहुत कुछ खोते हैं, लेकिन कुछ वादे, कुछ जिम्मेदारियाँ हमेशा हमारे मन में एक सवाल छोड़ जाती हैं– क्या हम उन वादों को कभी पूरा कर पाएंगे?

****

"सफलता उन्हीं को मिलती है, जो अपने काम को बिना किसी बहाने के पूरा करते हैं।" – चाणक्य

हजामत

लेख

एन.के. उपाध्याय
उप महाप्रबंधक–सतर्कता
अमेलिया कोल माइन परियोजना

आज रविवार को इरादा था कि मल्टिप्लेक्स में जाकर 'छावा' देखूँगा। फिर इंडिया–पाकिस्तान मैच के चलते मूवी देखने का इरादा मुल्तवी कर दिया। मैच शुरू होने में अभी काफी वक्त था। इधर बाल काफी बढ़ गए थे, शेव भी बर्फ की सफेद चादर की तरह चेहरे की शुष्क जमीन पर पसरी हुई थी। सोचा कि किसी अच्छे सलून में जाकर थोड़ा मेन्टनेंस कर लिया जाए। होटल से निकलकर कुछ दूर चलने पर जावेद–हबीब का यूनीसेक्स सलून दिख गया। मुझे इस तरह के हाई–फाई सलून के महँगे होने का किंचित अंदाज था। इसलिए सोच लिया कि पहले रेट की बात कर लूंगा।

सलून में घुसते ही ऐसा स्वागत हुआ मानो किसी पांच सितारा होटल में आ गया हूँ। "सर, क्या सर्विस चाहिए?" इस अंदाज में पूछा गया जैसे मैं बाल कटवाने नहीं, कोई बिजनेस डील साइन करने आया हूँ। मैंने हिम्मत जुटाकर कहा, "बस बाल कटवाने हैं और शेव करवा लूँगा। वैसे कटिंग के रेट क्या हैं?"

"वन–फिफ्टी ऑनली सर !" उधर से जवाब। मैंने अपने जेब में मौजूद 500 के नोट को हाथ की उँगलियों से छूकर राहत की साँस ली। सोचा शेविंग के ज्यादा से ज्यादा सौ रुपये और ले लेगा । 250 रुपये में डेंटिंग–पेंटिंग हो जाएगी।

अब शुरू हुआ बाल कटिंग सेशन। बाल काटने वाले लड़के ने बालों को ऐसे देखा, जैसे डॉक्टर एड्स के मरीज की रिपोर्ट देखता है। फिर कुछ इधर–उधर, दाएं–बाएं कैंची घुमाई, हेयर ड्रायर फूंका, स्प्रे मारा, पता नहीं कौन–कौन से जैल लगाए और बीच–बीच में 'सर, ये स्टाइल ठीक रहेगा?' पूछता रहा । शेविंग भी ऐसी हुई, जैसे कोई आर्टवर्क तैयार हो रहा हो। मैं खुश था कि चलो आज सींग कटाकर बछड़ों में शामिल हो ही जाऊंगा।

लेकिन असली ट्विस्ट तब आया जब बाल कटवाने के बाद काउंटर पर जाकर बिल पूछा । पूरे 1750 रुपये ! कुछ सेकंड तक तो मेरी सांसें अटक गईं। दिमाग सुन्न हो गया। मैंने धीरे से पूछा, "भाई, इसमें ऐसा क्या–क्या कर दिया कि 1750 रूपये का बिल हो गया?"

काउंटर वाला मुस्कुराया और बताने लगाः

"सर, हेयरकट– 750 रुपये, शेविंग– 500 रुपये, हेयर वॉश – 300 रुपये, स्टाइलिंग प्रोडक्ट – 200 रुपये।" मैंने पूछा, "मगर हेयरकट का आपने सिर्फ वन फिफ्टी बोला था ?" उसने मुस्कुराते हुए कहा–"वन–फिफ्टी नहीं सर ! सेवन फिफ्टी बोला था।"

मैं अवाक था। सेवन फिफ्टी को जानबूझकर धीमे से वन फिफ्टी बोलने की उसकी चाल अब मुझे समझ आ चुकी थी। मरता क्या न करता? बाल कटवाना जेब कटवाने जैसा लगा। 500 रुपये नगद और बाकी गूगल पे से पेमेंट करना पड़ा। सिर हल्का मगर दिल भारी हो चुका था। बाहर निकलते हुए अपने मुहल्ले के नाई की दुकान बेतहाशा याद आ रही थी जहाँ सिर्फ 170 रुपये में बाल भी कट जाते हैं, शेविंग भी हो जाती है और कभी कभी चाय भी मिल जाती है....

****

सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका

लेख

यशवंत सिंह नेगी
कनि.अधिकारी –हिंदी
खुर्जा परियोजना

हिंदी के मूल में भारतवर्ष की संस्कृति एवं भाषाएं एक–दूसरे की पूरक हैं। राष्ट्र के उत्थान एवं समृद्धि में भिन्न–भिन्न संस्कृतियाँ एवं राष्ट्रभाषा, मातृभाषा एवं कार्यालयीन भाषा अहम योगदान प्रदान करती है। किसी भी सभ्यता–संस्कृति के उन्नयन एवं विकास के दौर में भाषा की अपनी एक अहम भूमिका होती है। जाति अथवा समुदाय विशेष के संस्कार, उसकी आत्मा एवं प्राण उसकी अपनी भाषा में निहित होते हैं। इतिहास को टटोल कर देखें तो भारत की आत्मा और भारत के सूक्ष्म संस्कारों का निवास संस्कृत तथा हिंदी भाषा में केंद्रित है। संस्कृत एवं हिंदी भारतीय जन–मानस की सेवा वर्षों पूर्व से करती चली आ रही हैं। आदिकाल से ही मूलतः भारतीय सांस्कृतिक विस्तार की सतत ऐतिहासिक विकास यात्रा में हिंदी का अथक प्रभावशाली वर्चस्व कायम रहा है। भारत भूमि पर संस्कृतियों एवं सभ्यताओं के जन्म के साथ–साथ भिन्न–भिन्न भाषाओं व बोलियों की उत्पत्ति हुई और भिन्न–भिन्न कालखंडों में उनका सांस्कृतिक विकास होकर लिपिबद्ध विस्तार होता रहा। कालांतर में भारतीय पृष्ठभूमि पर समय परिवर्तन के साथ कितने ही ऐतिहासिक सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक सुधार के परिवर्तन हुए, जिनके विस्तार एवं विकसित करने में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका व योगदान रहा है।

विषय विस्तारः लगभग दो सौ वर्षों तक साम्राज्यवाद एवं पाश्चात्य संस्कृति के दंश को सहन करने के पश्चात भी भारतीय जन–मानस के मस्तिष्क पटल पर अपनी गहरी छाप छोड़ते हुए हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति पर ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर भी विस्तृत रूप से प्रभावशाली होती जा रही है। विदेशी आक्रान्ताओं के भारत भूमि पर कदम पड़ने के पश्चात मुगलों के दमन चक्र एवं ब्रिटिश साम्राज्य की पराधीनता से अभिशप्त कालखंड भारतीय समाज पर प्रतिकूलात्मक प्रभाव पड़ने के बावजूद भी हिंदी भारतीय सभ्यता–संस्कृति के वैभव को विस्तृत करने में सक्षम रही है। अपनी सहज–सरलता के मौलिक गुणों की मूल प्रवृति को हिंदी ने भारतीय सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के परिवेश पर साहित्य, कला, चलचित्र, गीत–संगीत व नृत्य–नाटिकाओं के माध्यम से गहरी छाप छोड़ते हुए हिंदी अपनी परिपक्वता को सुदृढ़ करने में निरंतर सफल होती रही है। इसके अतिरिक्त अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषा के शब्दों को हिंदी ने बड़ी सहजता एवं सजग प्रवाह से स्वयं में आत्मसात करते हुए भारतीय सांस्कृतिक विरासत को विस्तार देने में अहम भूमिका प्रदान की है। इस प्रकार यह कहना असंगत नहीं होगा कि हिंदी, भारतीय सांस्कृतिक विरासत को जानने एवं समझने की कुंजी है।

हिंदी संस्कारित भाषा होने के साथ–साथ एक वैज्ञानिक भाषा भी है। अंग्रेजी का 'यू' हिंदी का 'आप' का संस्कारित अर्थ कदापि प्रदान नहीं कर सकता है। कहने का तात्पर्य है कि हिंदी जैसे बोली जाती है, वैसे ही लिखी और पढ़ी जाती है। इसी प्रकार हिंदी का मुहावरा 'नौ दो ग्यारह होना' का अर्थ भाग जाना अंग्रेजी का नाईन प्लस टू से प्रकट होना संभव नहीं है। हिंदी राजभाषा से राष्ट्र भाषा और वर्तमान में विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है।

विश्व स्तर पर लगभग 982 मिलियन से अधिक व्यक्ति वर्तमान में हिंदी बोलने में सक्षम हैं, जबकि चीनी जानने वाले 874 मिलियन हैं, जिसके आधार पर कह सकते हैं कि हिंदी विश्व की प्रथम भाषा है। वर्तमान में हिंदी की शब्द संख्या ढाई लाख के लगभग है और दिन–प्रतिदिन हिंदी के शब्दों की संख्या बढ़ती जा रही है, जबकि मूलरूप से अंग्रेजी के शब्दों की संख्या लगभग दस हजार ही है। हिंदी शब्द समूह अन्य प्रादेशिक शब्दों को स्वयं में समावेश करते हुए निरंतर नए शब्द समुच्य से समृद्ध होकर और अधिक विस्तृत होता जा रहा है। प्रादेशिक लोक पर्व छट पूरे देश में मनाया जाता है यह लोक संस्कृतियों के विस्तार का सामाजिक ढांचा है, जो हिंदी के माध्यम से राष्ट्र के कोने–कोने तक लोगों में आस्था का संचार स्थापित करने में साकार हुआ, इसका श्रेय भी हिन्दी को ही जाता है।

"शिक्षा संसार में एक ज्योति की तरह होती है जो अज्ञानता को दूर करती है।" – अनोनिमस

संस्कृतियां और भाषाएं दोनों एक दूसरे की वाहक होती हैं, कश्मीर से कन्याकुमारी तक और पश्चिमी घाट से लेकर अरूणाचल तक देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी का योगदान अत्यंत सराहनीय रहा है। कहने का तात्पर्य है कि स्वाधीनता दिलाने से लेकर स्वभाषा, स्वदेशी, स्वराज तक की यात्रा में हिंदी को परिष्कार, संशोधन और समन्वय की अनेक स्थितियों से होकर गुजरना पड़ा है। मानवीय जीवन मूल्यों के मूल में हिंदी साहित्य एवं हिंदी काव्य धारा ने भारतीय सामाजिक ताना–बाना के अंतर्गत विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने में एक सेतु का काम तो किया ही है अपितु क्षेत्रीय जन–मानस के अतिरिक्त वैश्विक स्तर पर भी भिन्न–भिन्न सामाजिक रीति–रिवाजों, धार्मिक क्रिया–कलापों तथा रहन–सहन की जानकारी से एक–दूसरे को रू–ब–रू करवाने में सफल हुई है। जन–मानस की सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक विचारधाराओं के आदान–प्रदान को परिचालित करने के ऐतिहासिक कार्य को हिंदी ने बड़ी सहजता एवं सरलता से पूर्ण किया।

अतीत के कड़वे अनुभवों को देखें तो विदेशी आक्रान्ताओं के द्वारा भारत की सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक एकता के साथ–साथ भारतीय संस्कृतियों को भी समय–समय पर खंडित किया जाता रहा, जिसको हिंदी ने अपने मधुर स्वाभाविक गुणों से एकीकृत करके समूचे राष्ट्र के जन–मानस में सांस्कृतिक विस्तार को विस्तृत और संचारित करने का महान कार्य किया।

उपसंहारः यह अत्यंत आवश्यक होगा कि भारतीय सभ्यता एवं सांस्कृतिक विस्तार को कायम रखने के लिए भारतीय जन चेतना को देश में ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर जाग्रत करने की दिशा में कदम बढ़ाने होंगे। हिंदी के विद्वानों, हिंदी कवि–कवयित्रियों, कहानीकारों, लेखकों, गीतकारों तथा हिंदी के महान दार्शनिक–विचारकों को सांस्कृतिक विस्तार की इस धरोहर को और अधिक विस्तृत करने एवं जीवंत रखने के लिए जन–जन को जागरूक करके प्रेरित करना होगा। वर्तमान में हिंदी का वर्चस्व और विस्तार में निरंतर बढ़ोत्तरी होती जा रही है।

हिंदी भाषी क्षेत्र ही नहीं अपितु गैर–हिंदी भाषी क्षेत्र अर्थात दक्षिण भारत के अतिरिक्त वैश्विक स्तर पर भी जन–मानस बड़ी दिलचस्पी से हिंदी बोलने और समझने का प्रयास करते हैं। देश में व्यपारिक आदान–प्रदान की व्यावहारिक प्रक्रियाओं में भी हिन्दी का प्रयोग बढ़–चढ़ कर हो रहा है, साथ ही हिंदी को और अधिक बढ़ावा देने के लिए व्यापारियों को और अधिक प्रोत्साहित व जागरूक करने की आवश्यकता होगी।

हिंदी की पहुँच को वैश्विक बनाने में इंटरनेट का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इंटरनेट हिंदी भाषियों को ही नहीं बल्कि प्रादेशिक स्तर पर जन–मानस को जोड़ने के लिए एक सेतु का काम करने में निरंतर सफल हो रहा है। वर्तमान में भारत के अंदर गांव, खेत, खलिहान से लेकर विश्व में सात समुन्दर पार तक हिंदी की संप्रेषणीयता बढ़ती ही जा रही है। पिछले कई वर्षों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विदेशी जन–मानस में हिंदी की स्वीकार्यता बहुत अधिक बढ़ी है। इसके केंद्र में भारत की विश्व के प्रति वसुधैव कुटुंबकम् एवं बंधुत्व की अवधारणा है।

धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो भारतीय तीर्थ स्थलों पर बड़ी संख्या में विदेशी जन–मानस को हरे रामा हरे कृष्णा का जाप करते हुए अक्सर देखा जाता है। यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह भारतीय दर्शन, विचारधाराओं, सांस्कृतिक परम्पराओं एवं हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता का आकर्षण ही है। साहित्य, वाचिक परम्परा, कला, सिनेमा, नृत्य, ड्रामा, गीत–संगीत, सामाजिक परिवेश, विचारधारा, जीवन–शैली इत्यादि हिंदी भाषा के माध्यम से भिन्न–भिन्न क्षेत्रों की जानकारियाँ बड़े स्तर पर भारतीय जन–मानस तक पहुंचा कर सांस्कृतिक विस्तार को एक नया आयाम देकर स्थापित किया जा सकता है।

****

"शिक्षा से हम अपने सपनों को प्राप्त कर सकते हैं, और अपनी जिंदगी की दिशा बदल सकते हैं।" – नेल्सन मंडेला

कार्तिक स्वामी मंदिर, रुद्रप्रयाग– एक दिव्य अनुभव की दो दिवसीय आध्यात्मिक यात्रा

लेख

राघवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
प्रबंधक (एम.पी.एस.)
ऋषिकेश

मेरी आध्यात्मिक यात्रा - 09 और 10 मार्च, 2024

उत्तराखंड की गोद में बसा कार्तिकस्वामी मंदिर सिर्फ एक तीर्थस्थल नहीं, बल्कि एक ऐसा स्थान है जहाँ प्रकृति, भक्ति और आत्मा एक साथ गूंजते हैं। मेरी यह यात्रा 09 और 10 मार्च 2024 को हुई, जो न केवल शारीरिक रूप से रोमांचकारी थी, बल्कि आत्मिक रूप से बेहद गहन और शांति देने वाली भी। मैंने 09 मार्च को मंदिर ट्रेक किया, वहीं मंदिर परिसर स्थित धर्मशाला में रात बिताई, और 10 मार्च को एक बार फिर से मंदिर जाकर ध्यान और दर्शन किए। इन दो दिनों में जो अनुभूति हुई, वह शब्दों से परे है।

पौराणिक कथा और महत्व

भगवान शिव के दोनों पुत्र – भगवान गणेश और भगवान कार्तिकेय – दोनों ही अत्यंत तेजस्वी, शक्तिशाली और पूज्य माने जाते हैं। एक बार माता पार्वती और भगवान शिव ने अपने दोनों पुत्रों की परीक्षा लेने का निर्णय लिया। प्रतियोगिता थी, "जो तीनों लोकों की सबसे पहले परिक्रमा करेगा, वही श्रेष्ठ माना जाएगा।" भगवान कार्तिकेय तुरंत अपने वाहन मोर पर सवार होकर निकल पड़े, जबकि गणेश जी ने अपने माता–पिता की तीन बार परिक्रमा कर ली और बोले, "मेरे लिए आप दोनों ही त्रिलोक हैं।" यह सुनकर शिव–पार्वती अत्यंत प्रसन्न हुए और गणेश जी को श्रेष्ठ घोषित कर दिया। यह देखकर कार्तिकेय आहत हो गए और हिमालय की ओर प्रस्थान कर गए। मान्यता है कि उन्होंने इसी स्थान पर तपस्या की थी, जहाँ आज कार्तिक स्वामी मंदिर स्थित है। मान्यता है कि कार्तिकेय ने जिस स्थान को तप के लिए चुना, वह आज का कार्तिक स्वामी मंदिर स्थल है।

पहुँचने का मार्ग

मंदिर तक पहुँचने के लिए आपको सबसे पहले रुद्रप्रयाग पहुँचना होता है, जो ऋषिकेश से लगभग 140 किमी दूर स्थित है। रुद्रप्रयाग से कनक चौरी गाँव तक लगभग 40 किमी का रास्ता वाहन से तय किया जा सकता है। कनक चौरी से मंदिर तक की लगभग 3 किमी की ट्रेकिंग यात्रा शुरू होती है। यह मार्ग घने जंगलों, सीढ़ीनुमा चट्टानों, पक्षियों की मधुर आवाज और हिमालय की ठंडी हवाओं से होकर गुजरता है। ट्रेक के दौरान आप जीवन का एक नया आयाम महसूस करते हैं – एक ओर शारीरिक थकान, दूसरी ओर आध्यात्मिक ऊर्जा।

मंदिर से दृश्य - धरती पर स्वर्ग

करीब 2 घंटे की चढ़ाई के बाद जब मंदिर पहुँचा, तो आँखों के सामने जो दृश्य था, वो अविस्मरणीय था – नंदा देवी, चौखंबा, त्रिशूल, बंदरपुंछ, नीलकंठ जैसी हिमालय की चोटियाँ इनका दर्शन करना जैसे पुण्य का अनुभव था। सूर्य की किरणें जब इन बर्फीली चोटियों पर पड़ती हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे हिमालय स्वयं भगवान के चरणों को चूम रहा हो। सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य यहाँ अत्यंत अद्भुत होता है–जैसे स्वर्ग धरती पर उतर आया हो। हिमालय की छाया में बना यह मंदिर सादगी में भी दिव्यता से परिपूर्ण है।

रात्रि विश्राम - मंदिर धर्मशाला में एक शांत रात

मैंने 9 मार्च की रात मंदिर परिसर स्थित धर्मशाला में बिताई। वहाँ का वातावरण रात में और भी शांत और आध्यात्मिक हो जाता है। ठंडी हवा, रात के सन्नाटे में मंदिर की घंटियाँ, आसमान में असंख्य सितारे यह सब कुछ ऐसा लगता

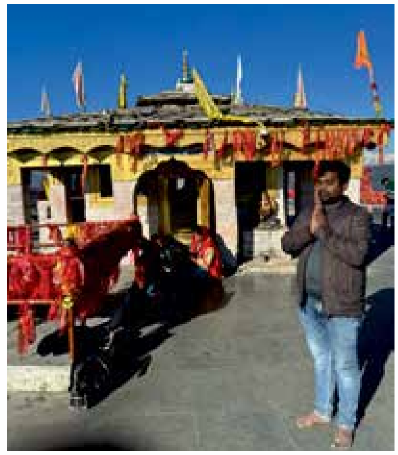

था मानो स्वयं भगवान कार्तिकेय आसपास मौजूद हैं। धर्मशाला साधारण है, लेकिन शुद्ध और सुरक्षित। वहाँ रात्रि विश्राम करने से एक अलग ही आत्मिक जुड़ाव महसूस होता है, जैसे प्रकृति और ईश्वर आपको छू रहे हों। मैंने रात्रि में मंदिर धर्मशाला में ही एक छोटी सी दुकान पर चूल्हे पर बना खाना खाया। लकड़ी के चूल्हे की धीमी आँच पर पका हुआ वो साधारण लेकिन बेहद स्वादिष्ट खाना आज भी मेरी स्मृति में बसा है। गरमागरम रोटी, सादी दाल, सब्जी और वो पहाड़ी नमक के साथ मिला सादापन, इसमें वो स्वाद था जो किसी बड़े होटल में नहीं मिलता। वहाँ बैठे साधुओं, यात्रियों और दुकानदारों के साथ मिलकर खाना खाते समय एक साझा आध्यात्मिकता महसूस हुई।

10 मार्च - एक और सुबह, एक और दर्शन

10 मार्च की सुबह फिर से मंदिर पहुँचा। सूर्योदय के समय मंदिर से हिमालय की चोटियों पर पड़ती रोशनी ने मेरे मन को मंत्र मुग्ध कर दिया। मैंने वहाँ ध्यान लगाया, और जीवन की भागदौड़ से कुछ पल पूर्ण शांति में बिताए। यह दूसरी यात्रा उसी मंदिर की थी, लेकिन अनुभव बिलकुल नया। दो दिन में दो बार उसी स्थान पर जाकर भी मन भरा नहीं। यही एक दिव्य स्थान की पहचान है।

यात्रा की झलकियाँ

- 09 मार्च सुबहः कनक चौरी से ट्रेक शुरू
- दोपहरः मंदिर पहुँच कर दर्शन
- रातः मंदिर धर्मशाला में रात्रि विश्राम
- 10 मार्च सुबहः पुनः मंदिर जाकर ध्यान व दर्शन
- अद्भुत दृश्य और भावनात्मक जुड़ाव की तस्वीरें

यात्रा से जुड़े सुझाव

• मार्च में मौसम ठंडा लेकिन साफ होता है – यात्रा के लिए उपयुक्त। • ट्रेकिंग जूते, गर्म कपड़े और पानी अवश्य रखें। • धर्मशाला में रुकने का मन हो तो पहले से स्थानीय जानकारी ले लें। • पर्यावरण और मंदिर परिसर की स्वच्छता का ध्यान रखें।

निष्कर्ष - जीवन को छू लेने वाली यात्रा

कार्तिक स्वामी मंदिर की यह यात्रा मेरे जीवन की उन कुछ यात्राओं में से एक रही, जिन्होंने मुझे भीतर तक छू लिया। यहाँ सिर्फ भगवान की उपस्थिति नहीं महसूस होती, बल्कि स्वयं के भीतर ईश्वर से जुड़ाव का अनुभव होता है। मेरी 09 और 10 मार्च 2024 की यह दो दिवसीय यात्रा न सिर्फ एक धार्मिक अनुभव थी, बल्कि एक आत्मिक सफर भी था। कार्तिक स्वामी मंदिर ने मुझे शांति दी, साहस दिया और यह एहसास कराया कि सच्चा जुड़ाव मंदिर की दीवारों में नहीं, बल्कि आपके भीतर होता है। अगर आप एक ऐसी यात्रा की तलाश में हैं, जो सिर्फ देखी ही नहीं, महसूस भी की जाए, तो कार्तिक स्वामी अवश्य जाइए। और यदि हो सके तो एक रात मंदिर परिसर में जरूर बिताइए – शायद आपको भी वही दिव्यता छू जाए जो मुझे 09 मार्च की रात को छू गई थी।

****

भगवान भाव के भूखे हैं

लघुकथा

आशुतोष कुमार आनंद
उप महाप्रबंधक(मानव संसाधन),
निदेशक(कार्मिक) सचिवालय

अक्सर हम मंदिरों में महंगे चढ़ावे चढ़ाते हैं, बड़ी–बड़ी पूजा अनुष्ठान करते या करवाते हैं, या कठिन व्रत रखते हैं, यह सोचकर कि शायद इससे भगवान प्रसन्न होंगे। लेकिन क्या कभी आपने सोचा है कि इन सबके पीछे भगवान की अपेक्षा क्या होती है? हमारे धर्मग्रंथों और संतों ने बार–बार यही दोहराया है कि भगवान किसी वस्तु या दिखावे के नहीं, बल्कि सच्चे भावों और प्रेम के भूखे हैं।

यह केवल एक कहावत नहीं, बल्कि भक्ति का मूल सिद्धांत है। भगवान को आपसे सोने–चांदी, महल या किसी विशाल आयोजन की आवश्यकता नहीं है। उन्हें तो सिर्फ आपका निष्कपट प्रेम, श्रद्धा और समर्पण चाहिए। अगर ये भाव नहीं हैं, तो आपके बड़े से बड़े अनुष्ठान भी व्यर्थ हो सकते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा हैः **"पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।"** (अध्याय 9, श्लोक 26)

इसका अर्थ हैः "जो कोई भक्त मुझे प्रेम से एक पत्ता, एक फूल, एक फल या थोड़ा–सा जल अर्पित करता है, उस शुद्ध बुद्धि वाले भक्त का वह प्रेमपूर्वक अर्पित किया हुआ मैं स्वीकार करता हूँ।"

यहाँ भगवान ने किसी बहुमूल्य वस्तु का उल्लेख नहीं किया, बल्कि सबसे साधारण वस्तुओं का नाम लिया – पत्ता, फूल, फल, जल। इन वस्तुओं का महत्व केवल उनके साथ जुड़े प्रेम और भक्ति के कारण है। यदि इन्हें सच्चे हृदय से अर्पित किया जाए, तो भगवान इन्हें सहर्ष स्वीकार करते हैं।

इतिहास और पौराणिक कथाओं में ऐसे अनगिनत उदाहरण मिलते हैं जहाँ भगवान ने केवल भाव को महत्व दियाः

- **शबरी के बेरः** वनवास के दौरान भगवान राम ने शबरी के जूठे बेर प्रेमपूर्वक खाए। शबरी के पास कोई मूल्यवान वस्तु नहीं थी, लेकिन उनका निश्छल प्रेम और वर्षों का इंतजार ही उनका सबसे बड़ा अर्पण था।
- **सुदामा के चावलः** भगवान श्रीकृष्ण ने अपने बालसखा सुदामा के लाए मुट्ठी भर सूखे चावल बड़े चाव से खाए। सुदामा की दरिद्रता उनके प्रेम के आड़े नहीं आई। भगवान ने उनके भाव को समझा और उन्हें अतुल्य धन प्रदान किया।
- **द्रौपदी का चीर हरणः** जब द्रौपदी का चीर हरण हो रहा था, तो उन्होंने केवल "हे कृष्ण!" कहकर पुकारा। उनके उस एक पुकार में जो श्रद्धा और विश्वास था, उसी से भगवान ने उनकी लाज बचाई।

ये सभी उदाहरण दर्शाते हैं कि भगवान को आपकी आर्थिक स्थिति, सामाजिक प्रतिष्ठा या बाहरी आडंबर से कोई सरोकार नहीं है। उन्हें केवल आपका हृदय चाहिए, जो प्रेम और विश्वास से भरा हो।

सच्ची भक्ति का अर्थ हैः

- **निश्छल प्रेमः** भगवान से निस्वार्थ प्रेम करना, बिना किसी अपेक्षा के।
- **समर्पणः** अपने आपको पूरी तरह उनके चरणों में समर्पित कर देना।
- **विश्वासः** उन पर अटल विश्वास रखना कि वे हमेशा आपके साथ हैं।
- **सकारात्मक कर्मः** अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए, दूसरों के प्रति दया और करुणा का भाव रखना।

जब आप भगवान की पूजा करते हैं, तो यह सोचना महत्वपूर्ण है कि आप उन्हें क्या अर्पित कर रहे हैं – केवल वस्तुएँ या आपका हृदय भी? एक गरीब भक्त का सच्चे मन से अर्पित किया गया एक फूल, एक अमीर के दिखावे वाले स्वर्ण कलश से कहीं अधिक मूल्यवान है।

जब 'नारायण–नारायण' से बढ़कर हुई किसान की 'राम–राम'

देवर्षि नारद, तीनों लोकों में 'नारायण–नारायण' का जाप करते हुए विचरते थे। उन्हें अपनी भक्ति पर बड़ा गर्व था और वे स्वयं को भगवान विष्णु का सबसे बड़ा भक्त मानते थे। एक बार उन्होंने भगवान विष्णु से पूछा, "प्रभु! आपका सबसे प्रिय भक्त कौन है?"

भगवान विष्णु मुस्कुराए और बोले, "नारद! मेरा सबसे प्रिय भक्त एक साधारण किसान है, जो अमुक गाँव में रहता है।"

यह सुनकर नारद को आश्चर्य हुआ। उन्हें लगा कि दिन–रात भगवान का नाम जपने वाला मैं, भगवान का प्रिय भक्त नहीं,

बल्कि एक किसान है! उन्होंने उत्सुकतावश पूछा, "प्रभु! क्या मैं एक दिन उसके साथ रहकर उसकी भक्ति देख सकता हूँ?"

भगवान ने अनुमति दे दी। नारद मुनि भेष बदलकर उस किसान के घर पहुँचे। उन्होंने देखाः

- **सुबह का आरंभः** किसान सुबह जल्दी उठता, अपने पशुओं को चारा–पानी देता, और फिर केवल दो–तीन बार 'राम–राम' बोलकर अपने खेतों की ओर चल पड़ता।
- **दिन भर का कार्यः** सारा दिन वह कड़ी धूप में खेत में हल चलाता, फसल बोता, पानी देता, और निराई–गुड़ाई करता। बीच–बीच में जब कभी फुर्सत मिलती, वह छोटी–सी सांस लेकर 'राम–राम' कर लेता। उसका पूरा ध्यान अपने काम में लगा रहता था।
- **शाम की वापसीः** शाम को थका–हारा वह घर लौटता। फिर से पशुओं को संभालता, परिवार के साथ भोजन करता और सोने से पहले फिर से दो–तीन बार 'राम–राम' कहकर सो जाता।

नारद मुनि ने पूरे दिन उस किसान को देखा। उन्हें लगा कि यह कैसा भक्त है? मैं तो चौबीसों घंटे 'नारायण–नारायण' जपता हूँ, जबकि यह किसान तो मुश्किल से दिन भर में दस–बीस बार भी भगवान का नाम नहीं लेता! नारद जी को लगा कि भगवान ने शायद मजाक किया है।

अगले दिन नारद मुनि वैकुंठ लौटे और भगवान विष्णु से बोले, "प्रभु! मैं उस किसान के पास रहा। वह तो मुश्किल से दिन भर में दस–बीस बार भी आपका नाम नहीं लेता। मैं तो चौबीसों घंटे आपका नाम जपता हूँ, फिर वह आपका सबसे प्रिय भक्त कैसे हुआ?"

भगवान विष्णु मुस्कुराए और बोले, "नारद! तुम एक छोटा–सा काम करोगे? यह तेल से भरा हुआ कलश लो। इसे लेकर तीनों लोकों की परिक्रमा करो, लेकिन ध्यान रहे, इसकी एक बूंद भी नीचे नहीं गिरनी चाहिए।"

नारद मुनि ने कलश लिया और बड़े ध्यान से तीनों लोकों की परिक्रमा करने लगे। उनका सारा ध्यान कलश पर ही केंद्रित था कि कहीं तेल की एक बूंद भी न गिर जाए। परिक्रमा पूरी करके वे वापस भगवान के पास आए और गर्व से बोले, "प्रभु! मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया। तेल की एक बूंद भी नीचे नहीं गिरी।"

भगवान ने पूछा, "शाबाश नारद! तुमने बड़ा अद्भुत काम किया। लेकिन यह बताओ, इस परिक्रमा के दौरान तुमने मेरा नाम कितनी बार लिया?"

नारद मुनि कुछ सोच में पड़ गए और बोले, "प्रभु! मेरा सारा ध्यान तो कलश पर था कि कहीं तेल न गिर जाए। भला मैं आपका नाम कैसे लेता?"

तब भगवान विष्णु ने नारद को समझाते हुए कहा, "देखा नारद! तुम एक साधारण–से कलश को लेकर परिक्रमा करते हुए मेरा नाम तक भूल गए। जबकि वह किसान दिन भर अपने गृहस्थी और कर्मों का भार उठाते हुए भी, हर सुबह–शाम और कार्य के बीच, मुझे याद करता है। वह अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए भी मुझे विस्मृत नहीं करता। उसकी 'राम–राम' में उसके हृदय का सच्चा भाव है, उसके कर्म की निष्ठा है, और उसका अटूट विश्वास है। यही कारण है कि वह मुझे तुमसे भी अधिक प्रिय है।"

नारद मुनि को अपनी गलती का एहसास हुआ। उनका अहंकार टूट गया। वे समझ गए कि भगवान को दिखावे या केवल जप की संख्या से कोई फर्क नहीं पड़ता। उन्हें तो उस हृदय का प्रेम, उस कर्म की निष्ठा और उस निस्वार्थ भाव की भूख है, जो उस साधारण किसान की श्राम–रामश में निहित था।

निष्कर्ष

यह समझना महत्वपूर्ण है कि भगवान भाव के भूखे हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि आप मंदिर न जाएँ या पूजा न करें। इसका अर्थ यह है कि इन सभी क्रियाओं में आपके हृदय का भाव, आपका प्रेम और आपकी निष्ठा सबसे ऊपर होनी चाहिए। जब आप अपने हृदय को शुद्ध करके, सच्चे प्रेम और भक्ति के साथ भगवान को याद करते हैं, तो वे निश्चित रूप से आपकी सुनते हैं और आपको अपना आशीर्वाद प्रदान करते हैं। इसलिए, दिखावा छोड़ें और अपने अंतर्मन में प्रेम का दीपक जलाएँ, क्योंकि वही सच्ची भक्ति है जिससे भगवान प्रसन्न होते हैं। सच्ची भक्ति जीवन के हर पल में भगवान को याद करने में है, अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करते हुए भी प्रभु का स्मरण करने में है। 'नारायण–नारायण' का जाप करना उत्तम है, लेकिन यदि वह जाप हृदय से न हो, तो उसका उतना महत्व नहीं, जितना कि एक कर्मशील व्यक्ति की उस छोटी–सी 'राम–राम' का, जो उसके गहन विश्वास और प्रेम से निकली हो।

****

राजभाषा विभाग द्वारा जारी
हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025–26 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं	कार्य विवरण	क्षेत्र	पत्राचार का अपेक्षित प्रतिशत	
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	**'क' क्षेत्र**	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	100%
			2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को	100%
			3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	70% (65%)
			4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100%
		'ख' क्षेत्र	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	90%
			2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को	90%
			3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	60% (55%)
			4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90%
		'ग' क्षेत्र	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	60% (55%)
			2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र का	60% (55%)
			3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	60% (55%)
			4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	60% (55%)

अन्य मदें

क्र.सं	अन्य मदें	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	80% (75%)	55% (50%)	35% (30%)
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75% (70%)	65% (60%)	35% (30%)
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45% (40%)
6.	हिंदी में डिक्टेशन/ की–बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70% (65%)	60% (55%)	35% (30%)
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय ।	50%	50%	50%

"जो पेड़ लगाता है, वह अपने अलावा दूसरों से भी प्रेम करता है।" – थॉमस फुलर

क्र.सं	अन्य मदें	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रानिक उपकरणों जिनमें कम्प्यूटर भी शामिल है, की खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
13(i)	मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों के द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
(ii)	मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (25%) (न्यूनतम)	30% (25%) (न्यूनतम)	30% (25%) (न्यूनतम)
(iii)	विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों / उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	 वर्ष में 02 बैठकें वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही 01 बैठक) वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो।	45% (40%)	35% (30%)	25% (20%)
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, ''ख'' क्षेत्र में 30% और ''ग'' क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए।		

कोष्ठक में दिए आंकड़े पिछले वार्षिक कार्यक्रम के हैं।

****

"पेड़ मनुष्य की आत्मा को शांति देते हैं।" – नोरा वालन

महाकाली का तांडव

कविता

डॉ काजल परमार
सहायक प्रबंधक (केंद्रीय संचार)
कॉरपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

जब चिर निशा में ज्वाला उठी, जब प्रलय बँधी न धार में,
जब रक्त रंजित भूमि हुई, जब काल बँध गया वार में।
तब जागी वह महाशक्ति, तब जागी वह कालरात्रि!

असुरों की चीत्कार बनी, मृत्यु की झंकार बनी!
रौद्र दृष्टि जब तिमिर समेटे, सप्त लोक संहार बनी!
कहाँ छुपेगा अधर्म अब, कहाँ भागेगा काल कहे!
चरण–चरण में भूचाल उठे, ध्वंस करे यह ज्वाल उठे!

सुनो! अंह दुर्गा, अहं भैरवी!
अंह कराला, महाकाली!
त्रिशूल हस्त, खड्ग सुशोभित, सिंहवाहिनी, महास्वली!
युद्धभूमि की नारी हूँ मैं!
विजय गीत की लाली हूँ मैं!
जो मुझको ललकारेगा, उसकी ही ज्वाला हूँ मैं!

सृष्टि का उद्घोष हूँ मैं!
संहार का प्रकाश हूँ मैं!
महाकाली की हुंकार हूँ मैं!
हर युग की अविनाशी ज्वाला हूँ मैं!

सुनो!
जब अंधकार की छाया गहराई,
जब पृथ्वी कम्पित, दिशाएँ थर्राईं,
जब रक्त–रंजित रणभूमि जली,
जब धर्म डरा, आशा बुझी।
तब जन्मी मैं! तब जागी मैं!
तब हुंकार उठी महाकाली की!

अट्ठाहस गूँजा नभ के तले,
गर्जन से पर्वत कांप उठे!
रक्त की रेखाएँ बह चली,
सिंहनी के चरण थर्रा उठे!

त्रिनेत्र जले जब काजल–सम,
रूद्र ने भी शस्त्र गिराए,
सप्त–सागर थर–थर काँपे,
काल स्वयं भी पथ से डगमगाए!

कौन रोक सके महाकाली को?
कौन बाँध सके इस ज्वाला को?
जो काल–ग्रस्त, वह नष्ट हुआ!
जो शरणागत, वह तृप्त हुआ!
रणभूमि में हुंकार मची, रक्तबीज थर्राया,
महिषासुर भयभीत हुआ, त्रैलोक्य ने शंख बजाया!

सुनो!
अंह दुर्गा, अंह चामुंडा!
अंह काली, अंह भैरवी!
अंह संहारिणी, महाभयंकर!
अंह महासिद्धिदात्री!
जो जन्मा, वह विनष्ट होगा!
जो अधर्मी, वह नष्ट होगा!
जो करेगा वंदन मेरा, वह भवसागर से मुक्त होगा!

रूद्र के तांडव की लय हूँ मैं!
सृष्टि की अंतिम हुंकार हूँ मैं!
महाकाली का प्रलय हूँ मैं!
हर युग की अविनाशी ज्वाला हूँ मैं!
अब भी जो थर्राता है, अब भी जो घबराता है,
सुन ले, देख ले, जान ले....
महाकाली का रथ बढ़ा है!

भय की काली रात ढहेगी,
सत्य की ज्वाला फिर दहकेगी!
जो झुका, वह मुक्त हुआ,
जो अड़ा, वह भस्म हुआ!

****

क्योंकि मैं एक पिता हूँ

कविता

जितेन्द्र जोशी
वरिष्ठ प्रबंधक–मा.सं./प्रोटोकॉल
कॉरपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

घर की छत का हर कोना
हो सुरक्षित सहज और सलोना
यही सोचकर हर रोज पसीना बहाता हूं
क्योंकि मैं एक पिता हूं।

बच्चों के चेहरे पर रहे हमेशा मुस्कुराहट
शाम को काम से, वो घर लौटने की आहट
देती है बहुत सुकुन मुझे
क्योंकि मैं एक पिता हूं।

पत्नी का श्रृंगार और मांग का सिंदूर है मुझसे
बच्चों की रंग भरी पिचकारी
व दीपावली के दीपों की ज्योति है मुझसे
क्योंकि मैं एक पिता हूं।

जिसकी शीतल सी छांव में
बसता है जो कि एक गांव में
परिवार की वो वट वृक्ष सी छाया है मुझसे
क्योंकि मैं एक पिता हूं।

नहीं दिखाता अपनी आंखों के आंसू और पीड़ा
सहनशीलता से है मैंने इनको साधा
छुपा लेता हूं अपने पैरों के छाले
क्योंकि मैं एक पिता हूं।

सीखाना है पाठ परिवार को
त्याग, देशभक्ति, सदाचार और नैतिकता का,
बनाना है एक सुदृढ़ देश–समाज मुझे,
क्योंकि मैं एक पिता हूं।

****

बोल सखी रे, पिया मन कैसे समाऊं

कविता

अजय रतूड़ी
सहायक अभियंता (सतर्कता)
कॉरपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

बोल सखी रे
पिया मन कैसे समाऊं,
सजल नयन से उनको निहारूं,
चरण पखारूं, प्राण बिछाऊ।

दुख भंजन अब दुःख सहेंगे,
शूल चुभेंगे बन में पाँव
अपनी काया पनही बनाकर
क्या मैं उनको पहनाऊं,
बोल सखी रे...................

जग–तन–मन कौपीन हैं त्यागे,
बस मन में जब राम है ध्यावें,
तब योगीजन दर्शन पावें,
मैं अकिंचन निर्धन कामी ,
उनको क्या मैं भेंट चढ़ाऊं
बोल सखी रे...................

धूलि चरण की महिमा न्यारी,
शिला बनी अति सुंदर नारी,
उन चरणन में शीश नवाऊं,
भक्ति भजन कर उनको सुनाऊं,
बोल सखी रे...................

पद पंकज पावन परमेश्वर को,
गंगा कैसे पार कराऊं,
बोल सखी रे...................

बोल सखी रे
पिया मन कैसे समाऊं,
सजल नयन से उनको निहारू,
चरण पखारूं, प्राण बिछाऊं।
बोल सखी रे...................

****

"अन्याय करने वाला इतना दोषी नहीं है जितना उसे सहन करने वाला" – डच कहावत

नारी की पराकाष्ठा

कविता

यशवंत सिंह नेगी
कनि. अधिकारी(हिंदी),
खुर्जा एसटीपीपी

कभी सहज सहनशीलता, तो कभी रौद्र रूप है नारी।
स्नेहिल और मातृत्व भावों की, अनुपम विभूति है नारी।
रूप एक पर अनेक संबंधों की, अभिव्यक्ति है नारी।
कभी माँ, बहन, पत्नी, बेटी का, बेजोड़ चरित्र है नारी।

त्याग–तपस्या व बलिदान की, असीम शक्ति है नारी।
मातृत्व पर अपना सब कुछ, न्योछावर करती है नारी।
पुरूष के अस्तित्व पूर्णता की, सजीव मूरत है नारी।
सुखमय आँचल की छाँव में, बचपन की लोरी है नारी।
गर्भ में जीवन के सृजन को, संचारित करती है नारी।

सृष्टि के सौन्दर्य में ईश्वर की, अद्भुत रचना है नारी।
सुखमय गृहस्थ की एक ठोस, आधारशिला है नारी।
कोमलांगनी, बुलंद इरादों की, ऊंची उड़ान है नारी।
धरती पर असंख्य दिव्य, शक्ति पुंज का रूप है नारी।

माँ सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी, पार्वती का पर्याय है नारी।
अबला नहीं पूर्ण शक्ति से, भरपूर सबला है नारी।
पूजनीय व आदर की, दिव्य आलौकिक छवि है नारी।
कभी सहज सहनशीलता, तो कभी रौद्र रूप है नारी।
स्नेहिल और मातृत्व भावों की, अनुपम विभूति है नारी।

****

चुप्पी तोड़नी होगी

कविता

शालिनी प्रिया
सहायक प्रबंधक (मा.सं.–भर्ती)
कॉरपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

वो अपने घर की परी है,
बड़े ही लाड़ प्यार में पली है,
अपने चंचल प्यारी बातों से
हर तरफ मुस्कान बिखेरी है।

पर जाने क्यों, अब बड़ी हुई तो
खतरों से घिर गई है,
जंजालों ने घेर रखा है,
मत पूछो कैसे जी रही है।

कुछ लड़कों के झुंड हर गली में,
बेसब्र बैठे हैं ताक में,
छेड़खानी के किस्से को,
अब बताती हूं विस्तार में।

इक प्यारी सी मासूम सी गुड़िया,
लेकर आँखों में सपनों की पुड़िया,
चल रही थी मस्त–मग्न,
बेखबर बेखौफ था उसका मन।

पर अचानक ये क्या हुआ,
जैसे किसी ने उसे छुआ,
मुड़ कर उसने जैसे देखा,
हाथ में चाबूक लिए एक शैतान खड़ा।

वो स्तब्ध सी सिसकियां लीं,
चिखती–चिल्लाती रही,
लहू के बूंद सड़क पर बह रही,
पर किसी ने उसकी एक न सुनी।

शायद इस अपराध की ताकत,
इतनी ज्यादा ना होती,
अगर लोगों ने अपनी आंखे,
मूंद ना ली होती।

अब चुप्पी तोड़नी होगी,
देना होगा सबको जवाब,
अब नया है जमाना,
नया बनायेंगे हम समाज।

****

जुस्तजू

कृतिका सिंह
सहायक प्रबंधक (मा.सं.–स्थापना)
कॉरपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

कविता

मिलोगे ना, जब किसी रोज़ तुम मुझे, तोहफा दूँगी कुछ एक नायाब सा तुम्हें।
तसल्ली बख्श होगे तुम माशूका की नर्म गोद में, और जुस्तजू का एक सख्त रियाज, कराऊँगी मैं तुम्हें।
सच बताना, रूठोगे तो नहीं ना उस रोज़ तुम मुझसे?
क्या है कि, तुम्हारी ना कई शिकायते दर्ज़ करनी हैं उस महफिल में मुझे।
कि मालूम था जब तुम्हें, कि नहीं आ पाया करोगे बार–बार
मेरी हथेली से अपनी हथेली चिपकाकर, मेरी ऊँगलियों का नाप लेने को।

तो मिलने आए थे जब तुम उस एक दफा, काश ले आते तभी मेरे लिए एक तो तोहफा।
कमबख्त, मघसलतुन को नसीब नही हो रहा, अलग सा ओएमजी प्रिंट वाला मेरा एक रूमाल,
कैसे धोलूँ उसे, उसमें बसी एक खुशबू सी, महक है तुम्हारे अर्क की कुछ खास,
और बस वही तो रह गई तुम्हारी एक चीज है मेरे पास।

फिर अकसर सोचती हूँ कि नही आ पाया करते हो जो मिलने तुम,
तो इसमें मसला है ही क्या?
अब बताओ जरा, जुस्तजू का ये महल कोई नजारेमंद गुलिस्तान थोड़ी है मियां।
हो कोई भी तार, दस्तक, कोई दरख्वास्त या हो कोई इल्तिजा,
फरेबी उम्मीद हर बार की, कि होगा जरूर कोई पैगाम तुम्हारा।
सताई हुई मैं, कुछ इस तरह से आस लगाती हूँ,
फिर उस आस को खुद आग लगाती हूँ।

बहरहाल कभी फुरसत से करना ख्याल, कि होगी कैसी वो सादगी,
कि बिन जाने नाम तुम्हारा, एक उर्फी नाम से ही अपनी सारी उम्र जोड़ डाली।
बात तो सिर्फ एक मुलाकात की थी ना और फिर अब इंतजार तो है सारी उम्र करना।
खूब नक्काशी करके भेजा था मुझे भी मेरे खुदा ने,
कि देखूँगी मैं भी तमाम दुनिया मन भर के।
लेकिन फिर नसीब कैसा लिखा उस नक्काशकार ने,
कि सारी उम्र ताकती रह गई एक ही चेहरे पे।

तुम्हारे इंकार के खौफ से कभी इज़हार नही कर पाती,
और क्योंकि तुम्हें तो मेरी सादगी ही पसंद थी ना,
इसलिए तो श्रृंगार नही कर पा रही।
फिलहाल तमाम सुकून है इसी जुस्तजू में,
कि दिन में हुआ सब कुछ ऐसे बताती हूँ तुम्हें,
कि तुम्हारे हिस्से का सब कुछ सुनती भी हूँ मैं,
और फिर सब सुनके बिलकुल तुम्हारे जैसे ही मुस्कुरा भी लेती हूँ मैं।

सुनो, मिलोगे ना अगर कभी एक रोज जो तुम मुझे, ये जो लिखा है, इसे पढ़के सुनाऊँगी तुम्हें,
और उम्र–दराज़ की अपनी इस जुस्तजू से कुछ इस तरह वाकिफ कराऊँगी तुम्हें।

****

"व्यस्त आदमी के पास आँसू बहाने का समय नहीं होता" – वायरन

गंगा जल की महिमा

विकास चंद्र डंगवाल
कनि. अभियंता, कोटेश्वर

कविता

गंगा जल धरती का प्राण हैं राजा भगीरथ का है यह फूल।
बिन गंगा जल धरती के धाम में हर पल उड़ती थी धूल।
सारे प्राणी वनस्पति जिन्दा धरती पर रहेंगे तब।
हर जगह उपलब्ध हो पर्याप्त स्वच्छ गंगा जल जब।।

हमारे गंगा जल में विद्यमान ऐसे है कई तत्व जिनपे टिकती है सारी सृष्टि।
गंगा जल के प्रति सदा रखे अपनी निर्मल दृष्टि।
जब–जब निर्मल बहता यह जल धोता हर मानव के पाप।
इसके मात्र आचमन करने से हर जाते मानव के हर पाप।।

किसान उगाता इस जल से अन्न, वह रहता इस पर पूर्ण निर्भर।
शक्ति का संचय शरीर में करता प्राणी इससे हर।
पशु पक्षी भी इस जल को पीकर करते अपना काम।
इसके निर्मल जल से आज तक रखा है जीवन थाम।।

आए दिन अक्सर हर मानव कर रहे इसके जल को गंदा।
कान खोलकर सुन ले हे मानव यह नही है अच्छा धंधा।
कूड़ा–कचरा रसायन और मल–मूत्र से करें न इसके जल को अपवित्र।
सार्थकता तभी है गंगा जल की धरती पर जब यह रहे पूर्ण पवित्र।।

तन–मन धन अर्पित कर रखें सभी इस जल की शुद्धि।
इस पवित्र जल के उपयोग से तभी रहेगी निर्मल बुद्धि।।

****

हिंदी का महत्व

एस. बलराम
भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी, ऋषिकेश

कविता

हिन्दी मेरा ईमान है
हिन्दी मेरी पहचान है
हिन्दी हूँ मै वतन भी
मेरा प्यार हिन्दुस्तान है।

हम सबकी प्यारी
लगती सबको न्यारी
कश्मीर से कन्याकुमारी
राष्ट्रभाषा हमारी।

जन–जन की भाषा है हिन्दी
भारत की आशा है हिन्दी

जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है
वो मजबूत धागा है हिन्दी।

हिन्दुस्तान की गौरवगाथा है हिन्दी
एकता की अनुपम परम्परा है हिन्दी
जिसके बिना हिन्द थम जाए
ऐसी जीवन रेखा है हिन्दी।

जिसने काल को जीत लिया है,
ऐसी कालजयी भाषा है हिन्दी
सरल शब्दों मे कहा जाए तो
जीवन की परिभाषा है हिन्दी।

****

"जीवन का उद्देश्य संसार को सुन्दर बनाना है" – श्रीराम शर्मा

पर्यावरण का बचाव

पुरूषोत्तम दत्त जोशी
उप प्रबंधक (चिकित्सालय)
टिहरी

कविता

धरा के है आधार, रोकें इन पर अत्याचार,
वृक्ष की होगी जब–जब वृद्धि, चारों तरफ होगी समृद्धि।
वृक्ष है सांसों के संगीत, ये है प्राण वायु के मीत ,
वृक्ष नहीं तो निकले जान, धरती होगी रेगिस्तान।
वृक्ष नहीं है मानव पर भार, प्राण वायु के हैं आधार,
वृक्ष जमीन पर रोपें अपार, स्वच्छ बने सारा संसार।
वृक्ष सदा करते कल्याण, कहते हैं सब वेद–पुराण,
वृक्ष है प्राणों की बंसी, वृक्ष है प्रदूषण विध्वंसी।
वृक्ष हो अगर हरे भरें, क्यों अकाल से हम डरें,
वृक्ष काटना है बेईमानी, सदा बरसाते है भू पर पानी।
वृक्ष धरा उपजाऊ बनाते, प्रदूषण को दूर भगाते,
वृक्ष लुटाते शुद्ध पवन, करें न कभी इनका हनन।
वृक्ष रोपें न्यारे–न्यारे, नगरी–नगरी द्वारे द्वारे,
वृक्ष हैं जीवन के फूल, बने सदा इनके अनुकूल,
वृक्ष प्रदूषण दूर भगाते, धरती को ये स्वर्ग बनाते,
वृक्ष कटे तो धरती हो बंजर, मानवता हो जाये जर्जर
वृक्ष काटेंगे तो पड़ेगा सूखा, मानव मर जायेगा भूखा,
वृक्ष और शिव एक सामान पीते विष, करते कल्याण।
वृक्ष की शान से यूं ही घर आंगन भी लगे सुन्दर,
शुद्ध हवा मिले मानव को पशु पक्षी भी साँस ले अन्दर।
प्राण रक्षक बन जाये वृक्ष, ऑक्सीजन का होगा मिश्रण,
वृक्षों से प्यार करना इतना, औलाद जैसे इनको समझना।
जितना हो सके वृक्ष लगाना, फल फूल पत्ते तुम्हारे ही काम में आना,
दुनिया को हमें है जगाना, वृक्ष लगाकर सुन्दरता बढ़ाना।

****

अंतिम ऊँचाई

किरन सिंह
(भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी विभाग)
ऋषिकेश

कविता

कितना स्पष्ट होता आगे बढ़ते जाने का मतलब,
अगर दसों दिशाएँ हमारे सामने होती,
हमारे चारों ओर नहीं।

कितना आसान होता चलते चले जाना,
यदि केवल हम चलते होते,
बाकी सब रूका होता।

मैंने अक्सर इस ऊलजलूल दुनिया को,
दस सिरों से सोचने और
बीस हाथों से पाने की कोशिश में,
अपने लिए बेहद मुश्किल बना लिया है।

शुरू–शुरू में सब यही चाहते हैं कि सबकुछ शुरू से शुरू हो,
लेकिन अंत तक पहुँचते–पहुँचते हिम्मत हार जाते हैं।

हमें कोई दिलचस्पी नहीं रहती,
कि वह सब कैसे समाप्त होता है,
जो इतनी धूमधाम से शुरू हुआ था,
हमारे चाहने पर।

दुर्गम वनों और ऊँचे पर्वतों को जीतते हुए,
जब तुम अंतिम ऊँचाई को भी जीत लोगे–

जब तुम्हें लगेगा कि कोई अंतर नहीं बचा अब,
तुममें और उन पत्थरों की कठोरता में,
जिन्हें तुमने जीता है–

तब तुम पाओगे कि कोई फर्क,
नहीं सब कुछ जीत लेने में
और अंत तक हिम्मत न हारने में।

****

पहली बारिश

प्रभात कुमार
सहायक प्रबंधक, जनसंपर्क
खुर्जा

कविता

अंतहीन इंतजार,
तड़प और आकुलता,
के बाद ही ये संभव हुआ है,
अभी–अभी,
बरखा की प्रथम बूंदों ने,
विरह दग्ध प्रेयसी धरा का,
सुकोमल तन छुआ है,
मन छुआ है।
बूंदों का माटी से प्रथम मिलन,
फैलती सौंधी खुशबू क्षण–क्षण,
दुंदभि लिए गरजते मेघ,
टर्राते मेंढक देते संदेश,
प्रकृति में प्रणय का नया राग छिड़ा है।
बरखा की नन्हीं बूंदों से,
तृण–तरू,
हर कोंपल, किसलय को,
नवजीवन मिला है,
पा प्रथम स्पर्श बूंदों का,
छुई–मुई के पल्लव सी,
सकुचाई शरमाई धरा के,
रोम–रोम में स्पंदन हुआ है।
हरित श्रृंगार से,
वसुंधरा को नया यौवन मिला है,
अभी–अभी,
बरखा की प्रथम बूंदों ने,
विरह दग्ध प्रेयसी धरा का,
सुकोमल तन छुआ है,मन छुआ है।

****

जीवन

पंकज दिवाकर
सहायक प्रबंधक(टीबीएम)
पीपलकोटी

कविता

ऐ ज़िन्दगी चल आज तुझको भी आबाद करते हैं, मरहूम हुए इस दिल को फिर से शादाब करते हैं ।
ना जाने किस दायरे में आकर सिमट गयी है तू, उस दायरे से तुझको खुदागवार करते हैं।
ऐ ज़िन्दगी चल आज तुझको भी आबाद करते हैं, मरहूम हुए इस दिल को फिर से शादाब करते हैं।

कि जिस कदर हाथों से रेत फिसलती है, उस कदर फिसलती जा रही है तू।
मौका–ए–मौका दरबदर गिरती जा रही है तू, इन खत्म हो चुके एहसासों को फिर से एहसास करते हैं।
ऐ ज़िन्दगी चल आज तुझको भी आबाद करते हैं, मरहूम हुए इस दिल को फिर से शादाब करते हैं।

कि घट रही हैं साँसें मेरी, किन्हीं ख्वाहिशों के अभाव में, बिगड़ रही है सीरत मेरी, अनेकों अनेक दबाव में।
तो बिगड़ चुके इन हालातों को, कुछ करके शर्मसार करते हैं।
ऐ ज़िन्दगी चल आज तुझको भी आबाद करते हैं, मरहूम हुए इस दिल को फिर से शादाब करते हैं।

कि ना जाने कब से इतना समझदार हो गया हूँ मैं, अपनी ख्वाहिशों को जानते हुए भी उनसे बेजार हो गया हूँ मैं।
तो फिर से इन ख्वाहिशों को मुस्कुराकर प्यार करते हैं, ऐ ज़िन्दगी चल आज तुझको भी आबाद करते हैं,
मरहूम हुए इस दिल को फिर से शादाब करते हैं।

कि वो दर्द जो सीने में था जबान पर ना आया, होठों पर थी सिसकियां उसकी, मगर आँखों से झलक ना पाया।
तो गुजरे हुए इन लम्हों को, अपनी खुशनुमा ज़िन्दगी का एहसास देते हैं।

ऐ ज़िन्दगी चल आज तुझको भी आबाद करते हैं, मरहूम हुए इस दिल को फिरसे शादाब करते हैं।
बड़ी जाती हैं तू ऐ मेरी ज़िन्दगी, चल आज से तुझको आज में जीने की कोशिश करता हूँ।

****

निगम में आयोजित हुई राजभाषा गतिविधियां एवं कार्यक्रम

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

प्रथम कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष श्री आर.सी.बहुगुणा, मुख्य महाप्रबंधक (विधि एवं माध्य.) की उपस्थिति में कार्यक्रम का संचालन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 18 मार्च, 2025 को कार्यपालक प्रशिक्षुओं एवं अन्य कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री आर.सी.बहुगुणा, मुख्य महाप्रबंधक (विधि एवं माध्य.) ने की । इस अवसर पर श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने श्री बहुगुणा का स्वागत प्लांट भेंट कर किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कार्यशाला की रुपरेखा पर प्रकाश डाला। श्री बहुगुणा ने अपने संबोधन में कहा कि यह कार्यशाला कार्यपालक प्रशिक्षुओं के लिए रखी गई है जो कि उनके दैनिक कार्य में बहुत सहायक सिद्ध होगी। यहां पर उपस्थित अधिकांश लोग 'क' क्षेत्र से हैं और उनकी मातृभाषा भी हिंदी है, इसलिए हिंदी में कार्य करने में हिचक नहीं होनी चाहिए। कार्यशाला के प्रथम सत्र में श्री संतोष टेलकीकर, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) ने प्रतिभागियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियमों एवं नियमों की जानकारी दी। इसके बाद श्री नरेश सिंह, सहायक हिंदी अधिकारी ने तिमाही प्रगति रिपोर्ट में भरी जाने वाली मदों पर चर्चा की। भोजनवकाश के बाद श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने शब्दों के शुद्ध रूप, अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्याय एवं नोटिंग ड्राफ्टिंग का अभ्यास कराया । कार्यशाला में प्रतिभागियों को अंग्रेजी से हिंदी की शब्दावलियां एवं साहित्यिक पुस्तकें भी वितरित किए गए।

द्वितीय कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष डॉ अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) की उपस्थिति में कार्यक्रम का संचालन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 13 जून, 2025 को गैर कार्यपालकों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) ने की । इस अवसर पर श्री एस.बी. प्रसाद, उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) श्री त्रिपाठी का स्वागत पुस्तक एवं पुष्प भेंट कर किया। इस अवसर पर डॉ. त्रिपाठी ने अपने संबोधन में कहा कि यह हर्ष की बात है कि निगम में राजभाषा कार्यान्वयन बहुत सुदृढ़ अवस्था में है। पिछले वर्ष 14 सितंबर, 2024 को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा निगम को प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाना और 29 जनवरी, 2025 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पुरस्कार योजना नराकास वैजयंती के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाना इसका प्रमाण है। हाल ही में विद्युत मंत्रालय ने भी निगम को राजभाषा

ज्योति शील्ड से पुरस्कृत किए जाने की घोषणा की है जो कि आगे आयोजित होने वाली हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में प्रदान किया जाएगा। हमें अपने प्रयासों को निरंतर जारी रखने की आवश्यकता है जिससे राजभाषा हिंदी के माध्यम से किए जा रहे राष्ट्र निर्माण के कार्य में हमारा योगदान जारी रहे।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने प्रतिभागियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियमों एवं नियमों की जानकारी दी तथा राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2025–26 के लिए जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम की प्रमुख मदों पर चर्चा की। इसके बाद श्री नरेश सिंह, सहायक हिंदी अधिकारी ने तिमाही प्रगति रिपोर्ट में भरी जाने वाली मदों पर चर्चा की। श्री संतोष टेलकीकर, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) ने प्रतिभागियों को हिंदी ई–टूल्स के बारे में जानकारी दी तथा नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग का अभ्यास कराया। कार्यशाला में प्रतिभागियों को अंग्रेजी से हिंदी की शब्दावलियां वितरित की गई।

****

टिहरी एवं कोटेश्वर यूनिट

प्रथम कार्यशाला

टिहरी में 21 मार्च, 2025 को अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता अपर महाप्रबंधक, मानव संसाधन एवं प्रशासन, श्री डी. पी.पात्रो ने की। मुख्य संकाय सदस्य के रूप में श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (हिंदी) एवं श्री संतोष तुकाराम टेलकीकर, सहायक प्रबंधक (हिंदी) उपस्थित रहे। कार्यशाला का विधिवत शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय द्वारा राजभाषा के स्वरूप एवं महत्व पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने कार्यालय में अपना कार्य शत–प्रतिशत हिंदी में संपन्न कर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने पर बल दिया। कार्यालय के काम–काज में हिंदी भाषा के सरल एवं सहज रूप का प्रयोग करने के लिए प्रतिभागियों को प्रोत्साहित भी किया। हिंदी कार्यशाला के संकाय सदस्य, श्री पंकज कुमार शर्मा ने उपस्थित प्रतिभागियों को 'राजभाषा नीति/नियम/अधिनियम' एवं 'सरल हिंदी का प्रयोग' पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली वक्तव्य देते हुए अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। अतिथि संकाय श्री संतोष तुकाराम टेलकीकर, द्वारा नोटिंग और ड्राफ्टिंग का अभ्यास कराया गया साथ ही 'राजभाषा हिंदी एवं तकनीकी शब्दावली' पर महत्वपूर्ण प्रस्तुतीकरण दिया गया। कार्यशाला का संचालन सुश्री बानी शुक्ला, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्रीमती नीरज सिंह, सहायक अधिकारी (हिंदी) द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी के 27 अधिकारियों/कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। श्री आर.डी.ममगाईं, उप प्रबंधक द्वारा कार्यशाला के अध्यक्ष, संकाय सदस्य एवं उपस्थित सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद व्यक्त किया गया।

हिंदी कार्यशाला के उद्‌घाटन एवं दीप प्रज्ज्वलन के अवसर पर उपस्थित श्री डी.पी.पात्रो, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) एवं अन्य अधिकारीगण

द्वितीय कार्यशाला

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी में दिनांक 23.05.2025 को टिहरी एवं कोटेश्वर कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), श्री डी.पी.पात्रो ने की। मुख्य संकाय सदस्य डॉ संजीव नेगी, प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, डोईवाला, देहरादून एवं आंतरिक संकाय श्री इन्द्र राम नेगी, प्रबंधक (हिंदी), टीएचडीसीआईएल टिहरी द्वारा कार्यशाला

कार्यशाला के उद्‌घाटन अवसर पर उपस्थित श्री डी.पी.पात्रो, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) एवं अन्य अधिकारीगण

के सत्रों में व्याख्यान दिए गए। कार्यशाला का विधिवत शुभारंभ अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), श्री डी.पी.पात्रो एवं संकाय सदस्य, डॉ संजीव नेगी के साथ ही श्री इंद्र राम नेगी, प्रबंधक (हिंदी), श्री आर.डी.ममगाईं उप प्रबंधक (जनसंपर्क/हिंदी) एवं वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर श्री पात्रो ने राजभाषा के स्वरूप एवं महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कार्यालय में अपना कार्य शत–प्रतिशत हिंदी में संपन्न कर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने पर बल दिया। कार्यालय के काम–काज में हिंदी भाषा के सरल एवं सहज रूप का प्रयोग करने के लिए प्रतिभागियों को प्रोत्साहित भी किया। हिंदी कार्यशाला के संकाय सदस्य, डॉ संजीव नेगी ने उपस्थित प्रतिभागियों को 'राजभाषा निति/नियम/अधिनियम' एवं 'सरल हिंदी का प्रयोग' पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान देते हुए अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। श्री इन्द्र राम नेगी, प्रबंधक (हिंदी) द्वारा नोटिंग और ड्राफ्टिंग का अभ्यास कराया गया, साथ ही 'राजभाषा हिंदी एवं तकनीकी शब्दावली' पर महत्वपूर्ण प्रस्तुतीकरण दिया गया। कार्यशाला का संचालन सुश्री बानी शुक्ला, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) ने किया। अंत में श्री आर.डी.ममगाईं, उप प्रबंधक द्वारा कार्यशाला के अध्यक्ष, संकाय सदस्य एवं उपस्थित सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद व्यक्त किया गया।

****

खुर्जा एसटीपीपी

प्रथम कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला का उद्‌घाटन एवं शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से करते अधिकारीगण

खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय में दिनांक 24.03.2025 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस अवसर पर श्री दिलीप कुमार द्विवेदी, वरि. प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) ने आमंत्रित वक्ता श्री प्रेम सिंह, पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा विभाग) को प्लांट भेंट कर सम्मानित किया। कार्यशाला को दो सत्रों में संचालित किया गया । प्रथम सत्र में पारिभाषिक शब्दावली ज्ञान तथा द्वितीय सत्र में पत्राचार के प्रकार व टिप्पण–आलेखन की विस्तृत जानकारी दी गई। उक्त कार्यशाला में टीएचडीसी–खुर्जा कार्यालय के कुल 24 अधिकारियों/कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। श्री दिलीप कुमार द्विवेदी ने कार्यशाला की उपयोगिता पर बल देते हुए उपस्थित प्रतिभागियों को अधिक से अधिक हिंदी में काम–काज करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया । श्री यशवंत सिंह नेगी, कनिष्ठ अधिकारी (हिंदी) ने कार्यशाला का संचालन किया । कार्यशाला को सम्पन्न करते हुए श्री नेगी ने आमंत्रित वक्ता, श्री प्रेम सिंह जी का आभार व्यक्त किया और कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सभी से अधिकतर हिंदी में काम–काज करने का आग्रह किया ।

द्वितीय कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला के उद्‌घाटन एवं दीप प्रज्ज्वलन के अवसर पर उपस्थित श्री कुमार शरद, कार्यपालक निदेशक एवं अन्य अधिकारीगण

खुर्जा एसटीपीपी में 26 जून, 2025 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्‌घाटन सत्र में कार्यपालक निदेशक(परियोजना), श्री कुमार शरद ने आमंत्रित मुख्य वक्ता श्री सतीश कुमार पांडे, पूर्व उप निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली को प्लांट भेंट कर स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने प्रतिभागियों को कार्यालयीन काम–काज में हिंदी का महत्व बताते हुए अधिकांशतः हिंदी में काम करने के निर्देश दिए। कार्यशाला का संचालन दो सत्रों में किया गया। जिनमें परिभाषिक शब्दावली ज्ञान तथा दैनिक प्रयोग में आने वाली अभिव्यक्तियों की विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यशाला में विषय वस्तु में रुचि लेते हुए कुल 25 कार्मिकों ने प्रतिभाग कर स्वयं को लाभान्वित किया। श्री यशवंत सिंह नेगी, कनिष्ठ अधिकारी, हिंदी ने कार्यशाला का संचालन करते हुए इस कार्यशाला को राजभाषा कार्यान्वयन में तकनीकी शब्दों के प्रयोग में महत्वपूर्ण बताया। कार्यशाला की पूर्णता पर श्री नेगी ने आमंत्रित मुख्य वक्ता श्री सतीश कुमार पांडे और प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुंत किया।

****

वीपीएचईपी, पीपलकोटी

प्रथम कार्यशाला

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी कार्यशाला का उद्‌घाटन करते श्री अजय वर्मा, मुख्य महाप्रबंधक(प्रभारी) एवं अन्य अधिकारीगण

वीपीएचईपी पीपलकोटी में 18 मार्च, 2025 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का शुभारंभ परियोजना प्रमुख श्री अजय वर्मा के साथ महाप्रबंधक (यांत्रिक, समा. एवं पर्या.) श्री जे.एस. बिष्ट, एवं महाप्रबंधक (टीबीएम) श्री के.पी. सिंह द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। श्री अजय वर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और इसके सतत उपयोग से सरकारी कार्यों की दक्षता एवं प्रभावशीलता में वृद्धि होती है। हमें हिंदी को अपने कार्यालय के कार्यों में अधिकाधिक अपनाना चाहिए ताकि सरकारी संचार सरल और प्रभावी बन सके। इस कार्यशाला में राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं उसके महत्व पर विशेष चर्चा की गई। कार्यशाला में श्री डी.एस. रावत (पूर्व वरिष्ठ हिंदी अधिकारी) ने प्रशिक्षक के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और हिंदी के प्रावधानों, सरकारी कार्य में उसके अनुप्रयोग तथा व्यवहारिक पहलुओं पर विस्तार से जानकारी प्रदान की। उन्होंने सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रभावी उपयोग हेतु अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

द्वितीय कार्यशाला

कार्यशाला के शुभारंभ के अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए मुख्य महाप्रबंधक, श्री अजय वर्मा

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की विष्णुगाड़–पीपलकोटी जल विद्युत परियोजना में 19 जून, 2025 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला वित्तीय वर्ष 2025–26 की पहली तिमाही के अंतर्गत राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यालयीन कार्यों में अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु आयोजित की गई। कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ परियोजना प्रमुख श्री अजय वर्मा (मुख्य महाप्रबंधक), श्री के.पी. सिंह (महाप्रबंधक, टीबीएम/सामाजिक एवं पर्यावरण), श्री पी.एस. रावत (महाप्रबंधक, विद्युत गृह) तथा कार्यशाला के प्रशिक्षक डॉ. दिगपाल सिंह (सहायक प्रोफेसर) द्वारा किया गया। कार्यशाला में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग, राजभाषा अधिनियम एवं नियमों की जानकारी दी गई।

****

अमेलिया कोल माइन

हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित श्री राजीव गोविल, महाप्रबंधक (प्रभारी) एवं अन्य अधिकारीगण

अमिलिया कोल माइन परियोजना में 26 मार्च, 2025 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का शुभारंभ श्री राजीव गोविल महाप्रबंधक (परियोजना), बाह्य संकाय (वक्ता) डॉ. एन. पी. प्रजापति, श्री डी. एस. राव, वरि.प्रबंधक (मा. सं. एवं प्रशा.), श्री राजीव रंजन सिंह, विभागाध्यक्ष (खान विभाग) द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। श्री राजीव गोविल महाप्रबंधक (परियोजना) ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी भाषा का प्रयोग एक नैतिक जिम्मेदारी के रूप में समझना चाहिए, जो न केवल कार्यालय के कामकाजी ढांचे को मजबूत करता है, बल्कि भारतीय भाषा और संस्कृति के प्रति सम्मान भी दर्शाता है। इस कार्यशाला में बाह्य संकाय डॉ. एन. पी. प्रजापति ने हिंदी भाषा की प्रासंगिकता, उसकी उपयोगिता और कार्यालय के कार्यों में उसकी अहम भूमिका पर गहराई से प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त, उन्होंने कार्यालय के ईमेल, नोट्स, रिपोर्ट्स आदि में हिंदी का प्रयोग करने के अभ्यास भी कराए। कार्यशाला के दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी के सही व्याकरण, वर्तनी और शब्दों के प्रयोग की महत्ता समझाई गई। कार्यशाला के अंत में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कई प्रश्न किए और वक्ता ने उन्हें हिंदी भाषा के विविध पहलुओं से संबंधित समाधान दिए।

****

कारपोरेट स्तरीय हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता

हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता के आयोजन का दृश्य

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में दिनांक 07 मार्च, 2025 को कारपोरेट स्तरीय हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कारपोरेट कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ–साथ निगम की यूनिटों एवं कार्यालयों से भी कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की । प्रतियोगिता के विजेताओं का निर्णय रा.इ.का. आईडीपीएल के वरि. अध्यापक, श्री मनोज गुप्ता एवं वरि. पत्रकार एवं साहित्यकार, श्री धीरेन्द्र रांगड निर्णायक मंडल ने किया। कार्यक्रम का संचालन श्री संतोष टेलकीकर ने किया। इस अवसर पर उप प्रबंधक(राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा ने मुख्य महाप्रबंधक(मा.सं. एवं प्रशा.), डॉ अमर नाथ त्रिपाठी का स्वागत प्लांट भेंट कर किया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कारों के साथ 04 प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए। महाप्रबंधक(मा.सं. एवं प्रशा.), के कर–कमलों से विजेता कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। कारपोरेट कार्यालय से डॉ काजल परमार, सहायक प्रबंधक(केंद्रीय संचार) ने प्रथम एवं श्री जितेन्द्र जोशी, वरि.प्रबंधक(प्रोटोकोल) ने द्वितीय एवं श्री अजय रतूड़ी, सहा.अभियंता, सतर्कता ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। खुर्जा कार्यालय से श्री यशवंत सिंह नेगी, कनि.अधिकारी, कारपोरेट कार्यालय से सुश्री कृतिका सिंह, सहा.प्रबंधक, टिहरी से निलेन्द्र बहुगुणा, कनि.अधिकारी एवं कारपोरेट कार्यालय से सुश्री शालिनी प्रिया, सहायक प्रबंधक ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता के विजेता कर्मचारियों को पुरस्कृत करते श्री अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

****

"जो अपने नियम नहीं बनाता उसे दूसरे के नियमों पर चलना पड़ता है" – हरिभाऊ उपाध्याय

कारपोरेट कार्यालय में हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

प्रतिभागियों से प्रश्न पूछते श्री एस.बी.प्रसाद, उप महाप्रबंधक(मा.सं.एवं प्रशा.)

कारपोरेट कार्यालय के कर्मचारियों के लिए 17 जून, 2025 को हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ पर उप प्रबंधक(राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा ने कार्यक्रम के अध्यक्ष, श्री एस.बी.प्रसाद, उप महाप्रबंधक(मा.सं. एवं प्रशा.) एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। श्री प्रसाद ने प्रतिभागियों से राजभाषा हिंदी एवं सामान्य ज्ञान से संबंधित प्रश्न पूछे एवं सही उत्तर देने वाले प्रतिभागी को उसी समय नगद पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता में कारपोरेट कार्यालय के कुल 44 कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की।

****

खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय में हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते कार्यपालक निदेशक, श्री कुमार शरद

खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय में 23 मई, 2025 को हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री कुमार शरद, कार्यपालक निदेशक (परि.) ने विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया। श्री कुमार शरद ने खुर्जा कार्यालय में हिंदी काम–काज की प्रशंसा करते हुए सभी को हिंदी की महत्ता से अवगत कराया और हिंदी में काम–काज करने के निर्देश दिए । उन्होंने हिंदी के परिपेक्ष्य में कार्मिकों को भविष्य में भी हिंदी प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक भाग लेने का आग्रह किया। इससे पूर्व श्री दिलीप कुमार द्विवेदी, राजभाषा अधिकारी, खुर्जा कार्यालय एवं विभागाध्यक्ष–मानव संसाधन ने हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया । प्रतियोगिता में खुर्जा कार्यालय के कुल 23 अधिकारी/कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। श्री यशवंत सिंह नेगी, कनिष्ठ अधिकारी ने प्रतियोगिता का संचालन करते हुए परिणामों की घोषणा की । प्रतियोगिता के समापन पर श्री दिलीप कुमार द्विवेदी ने प्रतियोगिता में उपस्थित प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया और सभी से अधिकतर हिंदी में कामकाज करने का अनुरोध किया।

****

वीपीएचईपी पीपलकोटी में हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

वीपीएचईपी में प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी

वीपीएचईपी, पीपलकोटी में 11 जून, 2025 को हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के विजेताओं को 19 जून, 2025 को आयोजित कार्यशाला के दौरान श्री अजय वर्मा, मुख्य महाप्रबंधक के कर–कमलों से पुरस्कृत किया गया। श्री अविनाश कुमार, सहायक प्रबंधक (जनसंपर्क) ने प्रथम, श्री नरेश जोशी, कनिष्ठ अभियंता (यांत्रिक) ने द्वितीय, श्री मोहित कथूरिया, अभियंता प्रशिक्षु, जल यांत्रिक ने तृतीय एवं श्री केशचन्द्र, कनिष्ठ अभियंता (बिजली एवं संचार) एवं श्री भानु प्रताप सिंह, कनिष्ठ अभियंता (सिविल) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।।

****

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के प्रशिक्षार्थियों का अध्ययन दौरा

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के प्रशिक्षार्थियों के टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के अध्ययन दौरे के दौरान बैठक का दृश्य

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली में अनुवाद का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे देश के विभिन्न राज्यों में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों के कर्मचारियों ने 23 मई, 2025 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश का अध्ययन दौरा किया। प्रशिक्षार्थियों के इस दल में देश के विभिन्न राज्यों में स्थित केंद्र सरकार के 28 संस्थानों के कर्मचारी शामिल थे । इस दल के साथ केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की ओर से श्रीमती लेखा सरीन, सहायक निदेशक (प्रशि.) उपस्थित थी। उल्लेखनीय है कि केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का अधीनस्थ कार्यालय है जिसमें केंद्र सरकार के देश भर के कार्यालयों के अनुवाद से जुड़े कर्मचारियों को विभिन्न अवधियों के लिए अनुवाद प्रशिक्षण दिया जाता है । टीएचडीसी में कार्यक्रम की संयोजक, श्रीमती लेखा सरीन, सहायक निदेशक (प्रक्षि.) एवं सभी अतिथियों का स्वागत श्री संतोष टेलकीकर, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) के द्वारा किया गया । इस अवसर पर श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने सभी प्रतिभागियों को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के व्यावसायिक कार्यों, टीएचडीसी में राजभाषा गतिविधियों के बारे में अवगत कराया । श्री शर्मा ने अनुवाद विषय पर अपने व्याख्यान से सभी प्रतिभागियों का मार्गदर्शन भी किया। उक्त दल को टिहरी बांध के मॉडल के माध्यम से इसकी कार्यप्रणाली से अवगत कराया गया। उन्हें टीएचडीसी के पुस्तकालय एवं भूगर्भ म्यूजियम का दौरा भी कराया गया। भूगर्भ म्यूजियम में श्री प्रियदर्शन सिंह, अपर महाप्रबंधक (भूगर्भ एवं भूतकनीकी) ने प्रतिभागियों को चट्टानों के नमूनों के साथ इनसे जुड़ी अनेक रोचक बातें बताई गई। सभी प्रतिभागियों ने इस दौरे को सफल बनाने में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के अधिकारियों व कर्मचारियों के सहयोग के लिए उनका धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

****

“आत्म सम्मान मनुष्य के दुर्गुणों को बस में करने की लगाम है” – बेकन

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति के द्वारा टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण

आलेख एवं साक्ष्य समिति के माननीय अध्यक्ष, श्री भर्तृहरि महताब, संसद सदस्य (लोकसभा) से निरीक्षण सफलतापूर्वक संपन्न होने पर माननीय राष्ट्रपति जी के आदेशों का संकलन प्राप्त करते श्री कुमार शरद, कार्यपालक निदेशक (परियोजना)

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बुलंदशहर के तत्वावधान में 07 मई, 2025 को होटल अशोक, नई दिल्ली में इसके 06 सदस्य संस्थानों का संयुक्त राजभाषा निरीक्षण एवं विचार विमर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में नराकास बुलंदशहर के अंतर्गत आने वाले टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय का भी राजभाषा निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम नराकास, बुलंदशहर के अध्यक्ष, पंजाब नेशनल बैंक के मंडल प्रमुख, श्री मधुकर कुमार शर्मा ने स्वागत संबोधन प्रस्तुत किया तथा सभी सदस्य संस्थानों के प्रमुखों एवं राजभाषा अधिकारियों ने माननीय समिति को अपना–अपना परिचय दिया। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कार्यपालक निदेशक (परियोजना), श्री कुमार शरद ने समिति के माननीय अध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब, संसद सदस्य (लोकसभा), माननीय संसद सदस्य (राज्यसभा), डॉ. दिनेश शर्मा, माननीय संसद सदस्य (लोकसभा), श्री उज्ज्वल रमण सिंह, माननीय संसद सदस्य (लोकसभा), श्रीमती माला राज्य लक्ष्मी शाह, माननीय संसद सदस्य (लोकसभा), श्री शंकर लालवानी, माननीय संसद सदस्य (लोकसभा), श्री सतीश कुमार गौतम एवं माननीय संसद सदस्य (लोकसभा), श्रीमती धर्मशीला गुप्ता का शॉल ओढ़ाकर एवं पुस्तक तथा पुष्पगुच्छ भेंटकर स्वागत किया। इस अवसर पर समिति के सचिव, श्री प्रेम नारायण, वरि. अनुसंधान अधिकारी, श्री इरफान अहमद खान, अनुसंधान अधिकारी, श्री रामनारायण साव, समिति सहायक, श्री अनुप साव एवं समिति रिपोर्टर, श्री सहदेव सिंह उपस्थित थे। निरीक्षण के दौरान माननीय अध्यक्ष महोदय एवं समिति के माननीय सदस्यों ने टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रशंसा की तथा राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने के लिए अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

टीएचडीसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई ने निरीक्षण कार्यक्रम के सफलतापूर्वक संपन्न होने पर खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय को बधाई देते हुए कहा कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड का प्रत्येक कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन को भी अपने मूल कार्य के समान ही महत्व देता है, जिसके परिणामस्वरूप राजभाषा निरीक्षणों के दौरान माननीय संसदीय राजभाषा समिति की प्रशंसा प्राप्त होती रही है। टीएचडीसी के निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह ने कारपोरेट कार्यालय की ओर से माननीय संसदीय राजभाषा समिति के माननीय अध्यक्ष, भर्तृहरि महताब एवं सभी माननीय संसद सदस्यों का उनके अमूल्य सुझावों के लिए धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि उनके सुझावों को पूरे निगम में लागू करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने का भरसक प्रयास किया जाएगा।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की ओर से निरीक्षण बैठक में कार्यपालक निदेशक (परियोजना) सहित श्री दिलीप कुमार द्विवेदी, वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन), श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री नरेश सिंह, सहायक अधिकारी (राजभाषा) तथा श्री यशवंत सिंह नेगी, कनिष्ठ हिंदी अधिकारी (राजभाषा) उपस्थित रहे।

****

नराकास हरिद्वार की 39वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 39वीं अर्धवार्षिक बैठक 29 जनवरी, 2025 को एम्स, ऋषिकेश में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता नराकास, अध्यक्ष एवं टीएचडीसी के निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह ने की। बैठक में समिति के सदस्य संस्थानों के प्रमुखों/प्रतिनिधियों एवं राजभाषा अधिकारियों ने बड़ी संख्या में प्रतिभागिता की। विदित ही है कि नराकास हरिद्वार देश की सबसे बड़ी नराकासों में से एक है जिसमें सदस्य संस्थानों की संख्या 67 है। इस समिति में रुड़की, हरिद्वार, ऋषिकेश एवं पर्वतीय क्षेत्र में स्थित केंद्र सरकार के संस्थान एवं कार्यालय सम्मिलित हैं।

मंच पर उपस्थित नराकास अध्यक्ष, श्री शैलेंद्र सिंह, एम्स की डीन, प्रोफेसर जया चतुर्वेदी एवं टीएचडीसीआईएल के मुख्य महाप्रबंधक(मा.सं.) डॉ. ए.एन.त्रिपाठी, बीएचईएल के महाप्रबंधक, श्री रंजन कुमार तथा नराकास सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा

कार्यक्रम में सर्वप्रथम समिति के अध्यक्ष एवं टीएचडीसी के निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह, एम्स, ऋषिकेश की डीन, प्रोफेसर जया चतुर्वेदी, बीएचईएल के महाप्रबंधक, श्री रंजन कुमार एवं टीएचडीसीआईएल के मुख्य महाप्रबंधक(मा.सं. एवं प्रधा.) डॉ. ए.एन.त्रिपाठी एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों के द्वारा सरस्वती वंदना एवं वंदेमातरम राष्ट्रीय गीत का गायन किया गया । सभी उपस्थित प्रतिभागियों ने करतल ध्वनि से इन विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया ।

बैठक में वर्ष 2023–24 के लिए नराकास राजभाषा वैजयंती योजना के अंतर्गत सदस्य संस्थानों को राजभाषा शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही छमाही के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया।

बैठक में नराकास सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा द्वारा नराकास हरिद्वार द्वारा आयोजित गतिविधियों एवं राजभाषा से संबंधित नवीनतम जानकारियों से अवगत कराया गया। उन्होंने राजभाषा हिंदी की प्रगति की अर्धवार्षिक रिपोर्टों की समीक्षा की। इसके उपरांत चर्चा सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित सदस्य संस्थानों के प्रमुख एवं प्रतिनिधियों ने अपने बहुमूल्य सुझाव दिए।

समिति के अध्यक्ष, श्री शैलेन्द्र सिंह ने अपने संबोधन में सभी सदस्य संस्थानों के प्रमुखों एवं प्रतिनिधियों को नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं संप्रेषित की। साथ ही उन्होंने एम्स, ऋषिकेश को इस बैठक की मेजबानी करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने समिति के सभी सदस्य कार्यालयों से विशेष रूप से अनुरोध किया कि हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए नवीन और रचनात्मक उपायों को अपनाएं। इस समिति की बैठक जब भी आयोजित की जाए तो यह प्रयास रहे कि उसमें कार्यालय के प्रमुख अधिकारी अनिवार्य रूप से सम्मिलित रहें एवं अपने संस्थान के अधिकारियों के साथ प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक करें। संस्थान के स्तर पर यह विचार करें कि हम अपने कार्य संचालन को हिंदी में और कैसे अधिक बढ़ावा दे सकते हैं। अपने कर्मचारियों के लिए हिंदी

कार्यशालाओं का नियमित आयोजन करें तथा कर्मचारियों को हिंदी में अधिक से अधिक काम करने के लिए प्रोत्साहित करें। उनके प्रयासों को मान्यता देते हुए उन्हें समय–समय पर पुरस्कार प्रदान करें तथा अपने–अपने कार्यालयों में हिंदी को सशक्त एवं प्रभावी भाषा बनाने में योगदान दें। उन्होंने सभी संस्थान प्रमुखों एवं प्रतिनिधियों तथा राजभाषा अधिकारियों को बैठक में भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया तथा सभी विजेता संस्थानों और प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों को बधाई दी ।

बैठक को संबोधित करते नराकास अध्यक्ष, श्री शैलेन्द्र सिंह

अध्यक्ष नराकास, श्री शैलेन्द्र सिंह ने टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के हिंदी अनुभाग की सराहना करते हुए कहा कि यह अनुभाग पूरे निगम में राजभाषा कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के साथ–साथ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार को भी पिछले 08 वर्षों से सफलतापूर्वक संचालित कर रहा है। नराकास हरिद्वार देश की बड़ी नराकासों में से एक है जिसमें रुड़की, हरिद्वार, ऋषिकेश एवं दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र के 67 कार्यालय सम्मिलित हैं। राजभाषा विभाग के द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों में 35 सदस्य संस्थानों की संख्या निर्धारित की गई है परन्तु यह समिति काफी समय पहले से ही इतने अधिक सदस्य संस्थानों के साथ आपसी तालमेल से कार्य कर रही है। इतनी बड़ी संख्या में राजभाषा विषयक आंकड़ों को संकलित करना एवं उनकी समीक्षा करना, सदस्य कार्यालयों से समन्वय करना काफी कठिन कार्य है। परन्तु टीएचडीसी का हिंदी अनुभाग श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) एवं सचिव नराकास हरिद्वार के कुशल नेतृत्व एवं समर्पित प्रयासों से इस कार्य को सफलतापूर्वक निष्पादित कर रहा है।

****

संपादक के नाम पाती

महोदय,

सर्वप्रथम माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की ओर से टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को "प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" प्राप्त करने हेतु बहुत–बहुत अभिनंदन और शुभकामनाएँ।

आपकी गृहपत्रिका "पहल" का 35 वां अंक प्राप्त हुआ। सुंदर कलेवर और आवरण से सुसज्जित आपकी पत्रिका बहुत की ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के बाह्य आवरणिक पृष्ठ पर श्री मैथलीशरण गुप्त की कविता 'तप्त हृदय...' के संयोजन से पत्रिका के विन्यास में चार चांद लग गए हैं। लेखों का चयन और संपादन अत्यंत सूक्ष्मदृष्टि का परिचायक है। ऊर्जा संरक्षण पर लेख हो या फिर सरस्वती नदी का उद्‌गम, विकास और लुप्त होने की कहानी हो, यह बात निर्विवाद है कि सभी लेख अपने–आप में अनोखे हैं। महासू देवता का मंदिर पर लेख हम मुंबई वालों के लिए सर्वथा नया है। नीम के गुण हो या विभिन्न छोटी–छोटी कविताओं का समावेश हो, सभी मन लुब्धकारी है। आगामी पत्रिका प्रकाशन हेतु अग्रिम शुभकामनाएँ।

सुश्री जयंतिका मुखर्जी
राजभाषा अधिकारी
माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, डॉकयार्ड रोड, मुंबई – 400 010

हास-परिहास

संता : हैलो, आप फ्लिपकार्ट से बोल रहे है??
फ्लिपकार्ट : यस सर..
संता : आज मेरी पत्नी की डिलिवरी हुई है और उसने एक लड़के को जन्म दिया है।
फ्लिपकार्ट : खुशी की बात है, पर इसमें हम आपकी क्या सेवा कर सकते है?
संता : कुछ नहीं, मैं आपको अपना अकाउंट नम्बर देता हूँ, आप उसमें रुपये जमा करवा दीजिए।
फ्लिपकार्ट : हेल्लो सर! कैसा कैश .. ???
संता : अरे आपकी कम्पनी ने इतने बड़े–बड़े विज्ञापन बोर्ड लगाये है ना ??!! "कैश ऑन डिलिवरी"।

गार्ड की नौकरी के लिए इंटरव्यू चल रहा था।
इंटरव्यू में एक कैंडिडेट से सवाल पूछा गया–
तुम्हें अंग्रेजी आती है ना?
गार्ड ने उत्तर दिया– क्यों, चोर इंग्लैंड से आएंगे क्या?

भारत एक ऐसा देश है जहाँ लोग लडाई से पहले बोलते हैं, "तू हाथ लगा के दिखा"।
और लडाई के बाद बोलते हैं "तूने हाथ कैसे लगाया"।।

सामाजिक भेदभाव का बेहतरीन उदाहरण :–
मिसेज ओबेरॉय के हस्बैंड ड्रिंक करते हैं।
सरला का पति शराब पीता है।
गंगुबाई का आदमी बेवड़ा है।

कल बहुत देर से दो लोग आपस में गाली–गलोच कर रहे थे.. फिर मैंने वहां पहुंचकर उन्हें समझाया, तब जाकर मारपीट शुरू हुई..।

जहाँ चोट लगने पर पुराने जमाने में 'हल्दी–चूना' लगाते थे, वहीं आज के जमाने में 'status' लगाते हैं..।

पहले लोग status लगाते हैं, फिर देखते है किस–किस ने देखा, फिर देखते हैं कि जिसके लिए लगाया उसने देखा या नहीं, और इसी तरह पूरा दिन बर्बाद कर देते हैं।

मोजा हमेशा धोकर पहनिए, नहीं तो हो सकता है,
जब किसी दिन कामयाबी कदम चूमने आये और मोजा सूंघ के चली जाए।

6:00 बजे का अलार्म लगाकर 5:59 बजे उठकर उसे बंद करके वापस सोने में ऐसी फिलिंग आती है, जैसे बम डिफ्यूज कर दिया हो।

एक डॉक्टर एक आदमी के पीछे भाग रहा था ।
लोगों ने पूछा क्या हुआ ?
डॉक्टर ने कहा– चार बार ऐसा हो गया है,
कि यह ब्रेन ऑपरेशन के बहाने आता है और बाल कटवा के चला जाता है....

इस मिलावट के जमाने में सिर्फ बिजली बनाने वाले ही है जो शुद्ध माल बेचते हैं, विश्वास न हो तो हाथ लगाकर देख लो।

तीन पागल बेड पे सो रहे थे। तीनों को जगह कम पड़ रही थी। एक पागल उतर के नीचे सो गया तो ऊपर से दूसरा पागल बोला, ओये ऊपर आजा, अब जगह हो गयी है।

दुनिया में तीन ही लोग हैं, जिनकी बातें औरतें ध्यान से सुनती और मानती हैं। 1. टेलर 2. फोटोग्राफर और 3. ब्यूटी पार्लर वाली, बाकी तो वो किसी की नहीं सुनती।

शादियों में जाओ तो लोग बोलते है, "खाना खाकर जाना"। अरे भाई हम खाना ही तो खाने आए है।

संस्कृत भाषा में पत्नी को क्या कहते हैं?
गुरूजी संस्कृत तो छोड़िये, किसी भी भाषा में पत्नी को "कुछ नहीं कह सकते",
जान है तो जहां है, भाषाएँ तो ऊपरी ज्ञान है।

साहित्यकार परिचय

नागार्जुन

नागार्जुन (30 जून 1911– 5 नवम्बर 1998) हिंदी और मैथिली के अप्रतिम लेखक और कवि थे। अनेक भाषाओं के ज्ञाता तथा प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार नागार्जुन ने हिंदी के अतिरिक्त मैथिली, संस्कृत एवं बांग्ला में अनेक मौलिक रचनाएं लिखी। उन्होंने संस्कृत, मैथिली एवं बांग्ला से अनुवाद कार्य भी किया। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित नागार्जुन ने मैथिली में यात्री उपनाम से लिखा था तथा यह उपनाम उनके मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र के साथ मिलकर एकमेव हो गया।

नागार्जुन का जन्म 1911 ई. की ज्येष्ठ पूर्णिमा को मधुबनी जिले के सतलखा में हुआ था। यह उनका ननिहाल था। उनका पैतृक गांव दरभंगा जिले का तरौनी था। इनके पिता का नाम गोकुल मिश्र और माता का नाम उमा देवी था। नागार्जुन के बचपन का नाम ठक्कन मिश्र था। छह वर्ष की आयु में ही उनकी माता का देहांत हो गया। इनके पिता (गोकुल मिश्र) अपने एक मात्र पुत्र को कंधे पर बैठाकर अपने संबंधियों के घर इस गांव से उस गाँव आया जाया करते थे। इस प्रकार बचपन में ही इन्हें पिता की लाचारी के कारण घूमने की आदत पड़ गयी और बड़े होकर यह घूमना उनके जीवन का स्वाभाविक अंग बन गया। "घुमक्कड़ी का अणु जो बाल्यकाल में ही शरीर के अंदर प्रवेश पा गया, वह रचना–धर्म की तरह ही विकसित और पुष्ट होता गया।"

नागार्जुन लगभग अड़सठ वर्ष (सन् 1929 से 1997) तक रचनाकर्म से जुड़े रहे। कविता उपन्यास, कहानी, संस्मरण, यात्रा–वृत्तांत, निबंध, बाल–साहित्य, सभी विधाओं में उन्होंने कलम चलायी। मैथिली एवं संस्कृत के अतिरिक्त वे बांग्ला से भी जुड़े रहे।

नागार्जुन का कविता संग्रह– युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आंखें, तालाब की मछलियां, तुमने कहा था, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, हजार–हजार बाहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, रत्नगर्भ, ऐसे भी हम क्या! ऐसे भी तुम क्या!!!, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, इस गुब्बारे की छाया में, भूल जाओ पुराने सपने, अपने खेत में।

प्रबंध काव्य – भस्मांकुर, भूमिजा

निबंध – हिमालय की बेटियां

उपन्यास – रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नयी पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरूण के बेटे, दुखमोचन, कुंभीपाक, हीरक जयंती, उग्रतारा, जमनिया का बाबा, गरीबदास

संस्मरण – एक व्यक्ति : एक युग

कहानी संग्रह – आसमान में चंदा तेरे

आलेख संग्रह – अन्नहीनम् क्रियाहीनम्, बमभोलेनाथ

बाल साहित्य – कथा मंजरी भाग–1, कथा मंजरी भाग–2, मर्यादा पुरूषोत्तम राम

****

टीएचडीसी ने प्राप्त किया नराकास वैजयंती राजभाषा पुरस्कार (प्रथम)

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश को 29 जनवरी, 2025 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में आयोजित हुई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अर्धवार्षिक बैठक में नराकास राजभाषा वैजयंती शील्ड (प्रथम पुरस्कार) से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार समिति के माननीय अध्यक्ष एवं टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के निदेशक(कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह के कर–कमलों से कारपोरेट कार्यालय, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के मुख्य महाप्रबंधक, डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी, उप महाप्रबंधक(मा.सं. एवं प्रशा.), श्री एस.बी.प्रसाद एवं हिंदी अनुभाग के अधिकारियों के द्वारा प्राप्त किया गया। इस अवसर पर समिति के सभी सदस्य संस्थानों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि तथा अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को यह पुरस्कार कारपोरेट कार्यालय में 2023–24 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रदान किया गया है। नराकास वैजयंती पुरस्कार संस्थानों को तीन श्रेणियों में प्रदान किए गए। श्रेणी–1 में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, श्रेणी–2 में भारत सरकार के कार्यालय/बोर्ड/स्वायत्तशासी निकाय, श्रेणी–3 में राष्ट्रीयकृत बैंक एवं बीमा कंपनियां शामिल थी। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को श्रेणी–1 में सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों की श्रेणी में यह पुरस्कार प्रदान किया गया है।

****

रामधारी सिंह दिनकर
(23 सितंबर,1908–24 अप्रैल, 1974)

“ प्रण करना है सहज,
कठिन है लेकिन उसे निभाना,
सबसे बड़ी जांच है
व्रत का अंतिम मोल चुकाना।
अंतिम मूल्य न दिया अगर,
तो और मूल्य देना क्या?
करने लगे मोह प्राणों का
तो फिर प्रण लेना क्या? ”

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED
(भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)

गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 (उत्तराखंड)
दूरभाष: 0135–2473614, वेबसाइट: http://www.thdc.co.in
श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (हिंदी) द्वारा टीएचडीसी इंडिया लि. के लिए प्रकाशित
(निःशुल्क आंतरिक वितरण के लिए)

www.paromita.org